कुछ सार्थक प्रयास

मध्याह्न भोजन प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश

"कहीं की गरीबी सर्वत्र उन्नति के लिए बाधक है और गरीबी मिटती है आत्म–जागरूकता से, जिसकी तैयारी प्राथमिक शिक्षा से ही हो सकती है, तभी गॉवों और देश का समग्र विकास संभव है।"

– प्रो0 गुर्नार मिर्डल, एशियन ड्रामा

मध्याह्न भोजन योजना
Mid Day Meal Scheme

कुछ सार्थक प्रयास

मध्याह्न भोजन प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश
तृतीय तल, अपट्रान भवन, गोमती नगर, लखनऊ-226010

प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना
Mid Day Meal Scheme

आमोद कुमार, आई.ए.एस.
निदेशक

मध्याह्न भोजन प्राधिकरण, उ0प्र0
तृतीय तल, अपट्रान भवन,
गोमतीनगर, लखनऊ–226010
दूरभाष : (0522) 2307093,2308502
फैक्स : (0522) 2308501
ई–मेल : lkomdm@gmail.com

प्राक्कथन

शिक्षा के सार्वभौमिकरण में मध्याह्न–भोजन–योजना का महत्वपूर्ण योगदान है। इस योजना के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में लगभग 1.5 लाख परिषदीय प्राथमिक/पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में बच्चों को प्रतिदिन बदल–बदल कर पका–पकाया भोजन दिया जाता है। अधिकांश बच्चे जो सुबह का भोजन किये बिना विद्यालय पढ़ने आते हैं, उन्हें विद्यालय में ही समय से भोजन मिल जाता है। 1 सितम्बर, 2004 से प्रदेश के प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय एवं अक्टूबर, 2007 से पूर्व माध्यमिक विद्यालय में लागू इस योजना के कारण विद्यालयों में बच्चों के ठहराव में वृद्धि हो रही है। स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य पर भी इसका अनुकूल प्रभाव देखा जा सकता है। ऐसे बहुत से परिवारों के बच्चे जिन्हें घर पर पर्याप्त भोजन प्राप्त नहीं होता था, उन्हें विद्यालयों में पौष्टिक भोजन मिल रहा है। इससे बच्चे कुपोषण से बच रहे हैं। यह एक अच्छा संकेत है।

मध्याह्न–भोजन–योजना के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में हमें विभिन्न स्तरों पर कठिनाईयों की जानकारी प्राप्त होती रहती हैं, जिनके निराकरण हेतु यथासम्भव प्रयास किये जाते हैं। योजना का क्रियान्वयन प्रत्येक स्तर पर सुचारु रुप से हो रहा है। ऐसा छात्रों के विद्यालय में पूरे समय रुके रहने के पश्चात् विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति से परिलक्षित होता है। विद्यालय में सभी धर्म व जाति के बच्चे एक स्थान पर भोजन करते हैं। इससे उनके मध्य सामाजिक सौहार्द एवं भाई–चारे की भावना जागृत होती है। इस योजना की सफलता के लिये ग्राम प्रधानों/सभासदों, अभिभावकों, अध्यापकों एवं समाज के प्रबुद्धजनों का आवश्यक सहयोग प्राप्त हो रहा है।

उपरोक्त सन्दर्भ में प्रदेश के कुछ जनपदों से प्राप्त जानकारी के आधार पर हमने प्रयास किया है कि ऐसे विद्यालय जहाँ मध्याह्न –भोजन की व्यवस्था में आशानुरूप सफलताएँ प्राप्त हुई हैं; उनका संकलन कर एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करा लिया जाये। सफलता के इन प्रयासों के आलेखन तैयार करने के लिए पाँच जिलों को चुना गया है। ये जिले हैं – बाराबंकी, झाँसी, मुरादाबाद, वाराणसी एवं मिर्जापुर। इन जनपदों के विद्यालयों में व्यक्तिगत रूप से जाकर स्थिति ज्ञात की गई।

इस पुस्तिका में हमने प्राथमिक/पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में संचालित मध्याह्न–भोजन–योजना के कुछ सफल अनुभवों का 16 कहानियों के रूप में संग्रह किया है जो दूसरे विद्यालयों के लिए उदाहरण बन सकते हैं। इन कहानियों में योजना के विभिन्न पहलुओं का

समावेश किया गया है; जिन्हें आधार मानकर अन्य विद्यालय, शिक्षा–समिति के सदस्य, ग्राम–प्रधान, अभिभावक आदि यदि उनके विद्यालयों में इस प्रकार की कोई परिस्थिति बनती हो तो उसका समाधान इन प्रयासों के माध्यम से कर सकते हैं। इन सफलता की कहानियों को पढ़कर एवम् उन्हें दूसरों को सुनाकर योजना से जुड़ी कठिनाईयों का निवारण करने में मदद मिल सकती है तथा सफलता के यह प्रयास अन्य विद्यालयों के लिये प्रेरणा स्रोत भी बन सकते हैं और योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु इनका उपयोग केस स्टडी की तरह भी किया जा सकता है। हमें विश्वास है कि इन छोटे–छोटे प्रयासों से अन्य विद्यालय प्रेरणा ले सकेंगे और सफलता के इन सार्थक प्रयासों व वस्तुस्थिति को समझ कर मध्याह्न–भोजन–योजना को एक नई दिशा प्रदान कर सकेंगे।

श्री पार्थ सारथी सेन शर्मा, आई.ए.एस., पूर्व निदेशक, मध्याह्न भोजन प्राधिकरण, उ. प्र. ने इस योजना की सफलता के दृष्टान्तों (सक्सैज स्टोरीज) का संकलन करने की परिकल्पना की थी, तद्नुरूप निर्धारित कार्य की रूप–रेखा को विचार में रखते हुए यह कार्य संपादित किया गया। श्री पार्थ सारथी सेन शर्मा के विशेष योगदान के लिए हम आभारी हैं।

सफलता के अनुभवों पर आधारित हमारा यह प्रयास सफल रहता है तो हम इसे एक श्रंखला के रूप में प्रकाशित कर सकेंगे। इस पुस्तिका के सम्पादन में अपना सतत् योगदान देने के लिए प्राधिकरण के अधिकारी एवं कर्मचारी विशेष रूप से श्री सन्तोष कुमार, अपर निदेशक, श्री सूरज नारायण मिश्र, उप निदेशक, सुश्री तरुणा सिंह, विशेषज्ञ पोषण, श्री अजय मिश्रा, प्रशासनिक अधिकारी एवं श्री समीर कुमार, समन्वयक बधाई के पात्र हैं। साथ ही मैं श्री विजय शर्मा, कन्सल्टैन्ट के कार्य की सराहना करता हूँ कि उन्होंने पूरी तत्परता एवं कुशलता से इस अभिलेखन–कार्य को सम्पादित किया।

जनवरी, 2010 **आमोद कुमार**

मध्याह्न भोजन योजना
Mid Day Meal Scheme

विषय सूची

प्राक्कथन	*i-ii*
मध्याह्न–भोजन–योजना : एक संक्षिप्त परिचय	1–3
1. स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक अभिवृद्धि	4–5
2. असहाय का सहारा	6–7
3. डूडा का एक सम्मिलित प्रयास	8–9
4. ''जो रब वही राम'' का अनुपम उदाहरण	10–11
5. सभी मनुष्य एक परमात्मा की समान संतान	12–13
6. बाल–पोषण एवं विद्यालयीय सौन्दर्यीकरण	14–15
7. सुपोषित भोजन : भविष्य की आधार–शिला	16–17
8. मध्याह्न–भोजन–योजना : बेसहारा बच्चों को वरदान	18–19
9. बच्चों की जिज्ञासा : भोजन मिलने की आशा	20–21
10. स्वैच्छिक संगठनों का योगदान	22–23
11. त्याग और सत्यनिष्ठा का उदाहरण	24–25
12. शिक्षा की ज्योति का एक आदर्श प्रयास	26–27
13. ग्राम–प्रधान का अवदान	28–29
14. विद्यालय नहीं यह मन्दिर है	30–32
15. सामाजिक सौहार्द एवं आपसी एकता का प्रतीक	33–34
16. स्वच्छता एवं सुन्दरता का प्रतीक विद्यालय	35–36

मध्याह्न भोजन योजना
Mid Day Meal Scheme

मध्याह्न–भोजन–योजना : एक संक्षिप्त परिचय

राष्ट्रीय पारिवारिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण–।।। (2005–06) के अनुसार लगभग आधे भारतीय बच्चे कुपोषित हैं। देश के बच्चों में कुपोषण की समस्या लम्बे समय से विद्यमान रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार भारत में कुपोषण की समस्या का मूल कारण आहार के स्तर का अच्छा न होना रहा है। स्कूल जाने वाले बच्चों के पोषण स्तर के अध्ययन किए जाने पर पता चला कि इन बच्चों में कुपोषण संबंधी कमियों में प्रोटीन, विटामिन–ए, आयरन तथा आयोडीन की कमी कुपोषण का प्रमुख कारण है। **रायटर** (एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था) के हाल ही में किए गये सर्वेक्षण के अनुसार विश्व के बच्चों में से कुपोषण के शिकार प्रत्येक तीन बच्चों में एक बच्चा भारत में रहता है। भारत के कुपोषित बच्चों में प्रत्येक छठवाँ बच्चा उ0प्र0 में रहता है। बचपन के प्रारम्भिक समय में कुपोषण के परिणाम से सभी अवगत हैं। प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर भी कुपोषण का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कुपोषण बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भी प्रभाव डालता है और उसके विकास को रोक देता है। इसके कारण बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति प्रभावित होती है और उनका पढ़ाई में ध्यान नहीं लगता है। जिसके फलस्वरूप उसकी शैक्षिक ग्राह्यता का स्तर कम हो जाता है।

इन कमियों को दूर करने के उद्देश्य से 'मिड–डे मील' के नाम से एक केन्द्र–पोषित योजना भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ की गयी। 28 नवम्बर, 2001 को माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन हेतु इसका और विस्तार किया गया। इस योजना के तहत सभी सरकारी, स्थानीय निकाय तथा सहायता प्राप्त गैर–सरकारी प्राथमिक/पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में बच्चों को प्रत्येक विद्यालय दिवस में इस प्रकार से पका–पकाया भोजन दिया जाता है, जिससे कि उन्हें प्रतिदिन 450 किलो कैलारी ऊर्जा और 12 ग्राम प्रोटीन प्राथमिक विद्यालय स्तर पर तथा 700 किलो कैलोरी ऊर्जा और 20 ग्राम प्रोटीन पूर्व माध्यमिक विद्यालय स्तर पर प्राप्त हो सके।

उत्तर प्रदेश में मध्याह्न–भोजन–योजना सभी 71 जिलों के सभी 820 विकास खण्डों तथा सभी नगर क्षेत्रों के लगभग डेढ़ लाख प्राथमिक/पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में संचालित की जा रही है। यह प्रदेश की सबसे बड़ी मध्याह्न–भोजन योजना है। वर्ष 2008–09 में लगभग डेढ़ लाख प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के 2.24 करोड़ बच्चे इस योजना का लाभ उठा रहे थे। इस योजना के प्रमुख उद्देश्य हैं–बच्चों के नामांकन में वृद्वि करना, उन्हें पूरे समय स्कूल में ठहराये रखना, उनके विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति में कमी लाना, बच्चों को अनुपूरक पोषाहार उपलब्ध कराकर उनके स्वास्थ्य में सुधार लाना ताकि शिक्षा ग्रहण करने की उनकी क्षमता में वृद्धि हो तथा सभी जाति एवं धर्म के बच्चों का एक साथ एक ही स्थान पर भोजन करना, जिससे कि उनके बीच सामाजिक सौहार्द एवं एकता की भावना में वृद्धि हो सके।

'मध्याह्न–भोजन–योजना' की व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की दृष्टि से इसका अलग से प्राधिकरण बनाया गया है, जिसकी प्रशासनिक व्यवस्था का दायित्व सचिव स्तर के वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी के नियंत्रण में रखा गया है। जनपद एवं विकास खण्ड स्तर पर इसका कार्य संचालन शिक्षा–विभाग के क्रमशः जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी तथा सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा किया जाता है। जिला स्तर पर योजना के संचालन का सम्पूर्ण दायित्व नोडल अधिकारी के रूप में जिलाधिकारी का होता है। ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायतों एवं शहरी क्षेत्रों में सभासदों को मध्याह्न भोजन की व्यवस्था के लिए उत्तरदायी बनाया गया है। प्रदेश के कुछ जिलों में शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में मध्याह्न–भोजन की व्यवस्था महिला सामाख्या, डूडा एवं स्वैच्छिक संस्थाओं के माध्यम से की जा रही है। प्रदेश के विद्यालयों में पके–पकाये भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न स्तरों पर समितियाँ गठित की गयी हैं। योजना के नियमित अनुश्रवण एवं प्रभावी आंकलन के लिए राज्य, जनपद एवं ब्लाक स्तर पर टास्क फोर्स का गठन किया गया है।

इस योजना के अन्तर्गत विद्यालय में भोजन तैयार करने के लिए कुछ आधारभूत सुविधायें जैसे–किचनशेड जिसमें स्टोर की सुविधा हो, गैस–चूल्हा एवं सिलेण्डर तथा खाना–पकाने एवं सामग्रियों के भण्डारण हेतु बर्तन, पीने का पानी, बच्चों के हाथ धोने, खाना–पकाने एवं खाने के बर्तन आदि धोने के लिए हैण्डपम्प एवं रसोईये की व्यवस्था की जाती है। ग्राम–प्रधानों अथवा वार्ड–सभासदों से यह अपेक्षा की गयी है कि वे महिलाओं को रसोईये के कार्य में लगायें तथा ये महिलायें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन–जाति विशेषकर विधवा, परित्यक्ता या दुर्बल वर्ग की हो। रसोईया को भोजन पकाने में दक्ष बनाने एवं गैस सिलेण्डर सुरक्षा सम्बन्धी जानकारी देने के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है।

मध्याह्न–भोजन की गुणवत्ता एवं विविधता के लिए सप्ताह के प्रत्येक कार्य दिवस में भिन्न–भिन्न प्रकार का भोजन निर्धारित मेनू के अनुसार दिये जाने की व्यवस्था की गयी है जिसमें इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि भोजन पौष्टिक, स्वादिष्ट तथा पकाने में सुगम हो। नई भोजन व्यवस्था में सोयाबीन का प्रयोग विशेषकर लागू किया गया है क्योंकि यह प्रोटीन का सबसे अच्छा स्रोत है। जिस विद्यालय में 200 से अधिक बच्चे हैं वहाँ भोजन में और अधिक पौष्टिकता एवं गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है। भोजन की गुणवत्ता एवं स्वाद के लिये यह आवश्यक है कि खाद्य सामग्री का भण्डारण साफ–सुथरे स्थान पर हो तथा ताजी हरी सब्जियों का अधिकाधिक प्रयोग किया जाये। भोजन पकाने के लिए उच्चकोटि के तेल, दाल, आयोडाइज्ड नमक एवं ऐगमार्क युक्त मसालों का ही प्रयोग यथासम्भव किया जाना चाहिए। मेनू को विद्यालय के किसी दीवार पर पेन्ट करा दिया जाये ताकि सभी

सम्बन्धित लोग बच्चों को प्रतिदिन मिलने वाले आहार के बारे में जान सकें।

इस योजना का निहित उद्देश्य बच्चों की पढ़ने की रुचि में वृद्धि करना है। योजना इस प्रकार संचालित की जाती है कि इसका शिक्षण अवधि एवं वास्तविक पठन–पाठन पर विपरीत प्रभाव न हो। इसके अन्तर्गत अध्यापकों से यह अपेक्षा की गई है कि वे बच्चों को भोजन वितरित किये जाने से पूर्व पके हुये भोजन को चखकर देख लें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि भोजन सुस्वाद एवं खाने योग्य है। इस प्रकार की व्यवस्था की जाती है कि भोजन के समय यथासम्भव ग्राम–शिक्षा–समिति अथवा पी0टी0ए0 के कम से कम दो सदस्य उपस्थित हों और वे अध्यापकों की जिम्मेदारी में हाथ बटा सकें। यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि बच्चे हाथ धोकर ही भोजन करें और भोजन परोसने व खाने में 30–40 मिनट से अधिक का समय न लगे।

मध्याह्न-भोजन-योजना
बाराबंकी

(1) पूर्व माध्यमिक विद्यालय, बरेठी, ब्लाक–देवा।
(2) प्राथमिक विद्यालय, मुज्जफरमऊ, ब्लाक–देवा।
(3) प्राथमिक विद्यालय, बेगमगंज, नगरक्षेत्र।
(4) प्राथमिक विद्यालय, सलारपुर, ब्लाक–देवा।

1

बाराबंकी जनपद के ग्राम बरेठी में स्थित प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय देवां ब्लाक के अन्तर्गत आते हैं। सड़क के दोनों ओर आमने–सामने इन विद्यालयों के भवन बने हैं, जिनके 300–350 बच्चों का भोजन प्रतिदिन पूर्व माध्यमिक विद्यालय के किचन में बनता है। ग्राम–प्रधान श्रीमती सुनीता यादव का मानना है कि एक साथ दोनों विद्यालयों के बच्चों का भोजन बनाने से भोजन की गुणवत्ता अच्छी रहती है, इसके अतिरिक्त समय व ऊर्जा की भी बचत होती है। उन्होंने भोजन बनाने के लिए दो महिला एवं एक पुरुष रसोइया को नियुक्त किया है। पुरुष रसोइया किचन कार्य में हाथ बटाने के साथ–साथ बाजार का भी कार्य करता है। खाना बनाने के लिए गैस का प्रयोग किया जाता है। गैस समाप्त होने पर अनावश्यक व्यवधान न हो इसके लिए दो गैस सिलेण्डर की व्यवस्था की गई है। खाना बनाने के लिए पर्याप्त बर्तनों की सुविधा है।

ग्राम निवासी श्री सर्वजीत का परिवार गरीबी से पीड़ित है। उनका बेटा शोभाराम कक्षा छः का छात्र है, जिसकी उम्र बारह वर्ष है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी करने के बाद इस बच्चे ने आगे पढ़ना बन्द कर दिया था। एक दिन जब शिक्षा मित्र श्री उमेश यादव ने इनके घर सम्पर्क किया तो पता लगा कि गरीबी के कारण सर्वजीत अपने बेटे को आगे नहीं पढ़ा पा रहे हैं, जबकि उनका बच्चा आगे पढ़ना चाहता था। श्री उमेश यादव ने उन्हे प्रेरित किया और बताया कि विद्यालय में बच्चे को निःशुल्क शिक्षा के साथ–साथ दोपहर का खाना, किताबें तथा वजीफा भी मिलेगा। सर्वजीत को पहले तो लगा कि विद्यालय का भोजन कहीं घर की तरह तो नहीं होगा, जब सर्वजीत के बच्चे का दाखिला कक्षा छः में करा दिया गया और एक दिन अध्यापकों ने उन्हे भी बच्चों के साथ विद्यालय में भोजन कराया तो भोजन के बाद सर्वजीत को काफी सन्तुष्टि मिली और उन्हें लगा कि यह भोजन तो घर के भोजन से भी अच्छा है एवं प्रतिदिन बदल–बदल कर दिया जाता है। उस दिन दाल–चावल बना था, दाल फ्राई थी और चावल भी अच्छी किस्म का था। इसके बाद उन्होने संकल्प लिया कि उनका बच्चा इसी विद्यालय में पढ़ेगा, प्रतिदिन स्कूल जायेगा और कोई गैर हाजिरी भी नहीं करेगा। विद्यालय में भोजन व अन्य व्यवस्था से प्रभावित होकर उन्होंने गाँव में इसका प्रचार प्रसार करना आरम्भ कर दिया। तबसे वह समय–समय पर विद्यालय के कार्यों में अपना योगदान देते हैं। वह मानते हैं कि हमारे जैसे अधिकांशतः घरों में एक ही तरह का भोजन बनता है। लोग नमक–रोटी,

चटनी–रोटी अथवा चावल नमक या केवल दाल या आलू के साथ एक जैसा भोजन करते हैं। विद्यालय में बदल–बदल कर भोजन मिलने से बच्चों को कम से कम एक बार सभी प्रकार के पौष्टिक तत्व मिल जाते हैं।

प्रधानाध्यापक श्री रूप नारायण वैसवार का कहना था कि जब उनके पूर्व माध्यमिक विद्यालय में बच्चों को भोजन नहीं मिलता था, तब अक्सर कुछ बच्चे प्रार्थना के समय अथवा पी0 टी0 के दौरान कमजोरी के कारण बैठ जाते थे और कभी–कभी तो बच्चे बेहोश हो जाते थे। जानकारी करने पर पता चला कि अधिकतर बच्चे घर से बासी खाना खाकर आते थे अथवा खाली पेट आते थे; क्योंकि सुबह उनके घर पर भोजन नहीं बनता था। जब से विद्यालय में भोजन मिलने लगा है, तब से बच्चों में कमजोरी की स्थिति देखने को नहीं मिली है। उनके स्वास्थ्य में लगातार सुधार हुआ है। बच्चों का पढ़ाई के प्रति लगाव, रूचि एवं एकाग्रता में वृद्धि हुई है। फलस्वरूप बच्चों की कक्षा में उपस्थिति के साथ–साथ विषयों के प्रति उनकी समझ भी बढ़ी है। इसका उनके परीक्षा परिणाम पर अच्छा प्रभाव पड़ा है।

असहाय का सहारा

2

ऐसे भी ग्रामीण क्षेत्र हैं जहाँ गरीबी के कारण लोग अपने बच्चों को पढ़ाने–लिखाने में असमर्थ हैं और उन्हें अपने बच्चों का भरण पोषण कर पाने में कठिनाई होती है। बाराबंकी जिले के मुजफ्फरपुरमऊ गाँव में एक ऐसा ही परिवार है। श्रीमती सुधा देवी यादव, जिनकी उम्र लगभग 40 वर्ष है, के पति की 3–4 वर्ष पहले बिजली का करेंट लगने से मृत्यु हो गयी थी। चार बेटियाँ, एक बेटा व स्वयं का जीवन निर्वाह करना उनके लिये कठिन था। खेती से होने वाली आमदनी बहुत कम थी। पारिवारिक हालात भी ऐसे नहीं थे कि कहीं से कोई मदद मिल सके। वह बहुत असहाय थीं। एक दिन ग्रामवासी श्री विजय बहादुर ने पहल कर ग्राम–प्रधान श्री बैजनाथ से विचार विमर्श किया कि क्यों न विद्यालय में दोपहर का भोजन बनाने के लिये रसोइया का कार्य सुधा देवी को दे दिया जाये? समुदाय के अन्य लोगों विशेषकर महिलाओं ने भी ग्राम प्रधान से सुधा देवी की रसोइये के रूप में विद्यालय में नियुक्त करने की वकालत की। इन सभी का मत था कि गरीब एवं पिछड़ी जाति की विधवा महिला होने के कारण यह कार्य उसे ही मिलना चाहिए। इस बात से प्रधान जी व ग्राम–शिक्षा–समिति के अन्य सदस्य भी सहमत हो गये और सुधा देवी को विद्यालय में रसोइया का कार्य करने के लिए नियुक्त कर दिया। विद्यालय में सौ बच्चों का भोजन पकाने के लिये इन्हें 800–900 रूपये प्रतिमाह मिल जाते हैं। यह उसके परिवार के लिए बहुत बड़ा आर्थिक सहारा हो जाता है। बच्चों को खाना खिलाने के बाद यदि खाना बचता है तो वह भी खा लेती है।सुधा देवी के तीन छोटे बच्चे पास के ही परिषदीय विद्यालय में पढ़ते हैं।

प्रधानाध्यापिका श्रीमती निर्मला वर्मा का कहना है कि सुधा देवी (रसोइया) विद्यालय में अध्यापकों के आने से पूर्व ही विद्यालय आकर खाना बनाने का कार्य आरम्भ कर देती है। इससे अध्यापकों को स्कूल में दोपहर के खाने की कोई चिन्ता नहीं रहती और वह अपना सारा ध्यान बच्चों की पढ़ाई पर लगा पाते हैं। सुधा देवी (रसोईया) का घर विद्यालय के बिल्कुल नजदीक होने के कारण आवश्यकता पड़ने पर उसकी बड़ी बेटी जिसकी उम्र लगभग 20 वर्ष है, विद्यालय आकर भोजन बनाने के कार्य (जैसे शाक–सब्जी धोना व काटना, दाल–चावल साफ करके धोना, खाने के बर्तनों की सफाई, किचेन की धुलाई आदि) में सहयोग कर देती है। विद्यालय में अलग रसोई घर व स्टोर रूम

रसोई में पका–पकाया भोजन व साफ–सुथरे बर्तन रखने के लिये स्लैब भी बनी है। भोजन बनाने के लिए विद्यालय में गैस–बर्नर व दो सिलेन्डर हैं। खाने के बाद बर्तनों की प्रतिदिन साफ–सफाई की जाती है और रसोई घर की धुलाई भी होती है। इस विद्यालय में पिछले 3–4 वर्षों में मध्याह्न–भोजन के कार्य में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आई है।

एक और परिवार

ग्रामवासी छेत्रपाल भिक्षुक के परिवार में पाँच बेटे व तीन बेटियाँ हैं। वह भीख माँगकर, नाँच–गा कर किसी तरह परिवार का भरण–पोषण करते हैं। इनकी दो बेटियों की शादी हो गई है। तीन बड़े बेटे प्राथमिक विद्यालय मुरादाबाद से प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी करके आगे नहीं पढ़ सके थे, क्योंकि छेत्रपाल की सामर्थ्य नहीं थी कि वह अपने बच्चों के लिए दो वक्त का भोजन भी जुटा सके। अतः इन तीनों बड़े बेटों को बीच में पढ़ाई छोड़कर रोजी–रोटी की जुगाड़ में लगना पड़ा। आज–कल वे साइकिल पर रखकर गली–गली में झाड़ू बेचने का कार्य करते हैं और किसी तरह अपना हाथ खर्च निकाल लेते हैं। यह तो अच्छा है कि छेत्रपाल के तीन अन्य छोटे बच्चे (दो बेटा व एक बेटी) अपनी पढ़ाई में लगे हैं और पूर्व माध्यमिक विद्यालय, मुरादाबाद के छात्र हैं। विद्यालय में मिलने वाली छोटी–छोटी सुविधाएँ वह चाहे छात्रवृत्ति हो, निःशुल्क पाठ्य–पुस्तकें हों, ड्रेस हो अथवा एक बार का विद्यालय में मिलने वाला पौष्टिक आहार; उनके परिवार के लिए बहुत बड़ा सहारा है; इससे बच्चे अशिक्षित होने के अभिशाप से बच गये हैं।

डूडा का एक सम्मिलित प्रयास

3

बाराबंकी नगर क्षेत्र के 32 परिषदीय विद्यालयों के बच्चों को मध्याह्न–भोजन उपलब्ध कराने का दायित्व नगरीय विकास प्राधिकरण (डूडा) को दिया गया है। 26 प्राथमिक विद्यालयों तथा 6 पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के लगभग 3000 बच्चों का भोजन एक साथ नगर के चाचा नेहरू प्राथमिक विद्यालय के भवन में स्थित केन्द्रीयकृत रसोई (सेन्ट्रेलाईज्ड किचन) में बनता है। वहाँ से प्रत्येक विद्यालय में समय से भोजन पहुँचाने व वितरण की जिम्मेदारी डूडा द्वारा नियुक्त कर्मचारियों की होती है।

इस सम्बन्ध में प्राथमिक विद्यालय बेगमगंज के प्रधानाध्यापक श्री ननकऊ सिंह से, बच्चों व उनके अभिभावकों से वार्ता की गयी। उन लोगों का कहना था कि स्कूल में भोजन अच्छा व समय से मिलता है। डूडा के कर्मचारी अपने बर्तनों में रिक्शा–ठेलिया पर रखकर गरम खाना लाते हैं और विद्यालय के बच्चों को परोसते हैं। श्री सिंह ने बताया कि हम लोग तो बच्चों को लाइन में बैठाकर खाना परोसवा देते हैं और जब तक बच्चे खाना खाते हैं तब तक अपनी देख–रेख रखते हैं। खाने की मात्रा पर्याप्त होती है और बच्चों को दुबारा पूछकर भी खाना दे दिया जाता है। अध्यापक स्वयं खाना चखते हैं। उन्हें भी खाना अच्छा लगता है। डूडा का यह प्रयास पूरी तरह सफल है, यद्यपि इसमें सुधार की सम्भावनायें भी हैं।

श्री सिंह (प्रधानाध्यापक) का मानना है कि इससे पहले की मध्याह्न–भोजन व्यवस्था में सबसे बड़ी दिक्कत बच्चों की पढ़ाई के साथ–साथ विभिन्न विभागों एवं स्थानीय प्रतिनिधियों से सामंजस्य बनाये रखने की थी। इसके अतिरिक्त दिन–प्रतिदिन के संबंधित कार्यों के कारण चिन्ता रहती थी। आजकल की व्यवस्था में बहुत ही शान्ति है और विद्यालय भोजन से सम्बन्धित कार्य की चिन्ता तो बिल्कुल दूर हो गयी है। डूडा के द्वारा नियुक्त लोग इतने सशक्त हैं कि वह अपना कार्य पूरी तत्परता से समय पर पूरा कर लेते हैं। इस प्रकार यह व्यवस्था बहुत ठीक ढंग से चल रही है।

विद्यालय की छात्रा कु0 ज़ैनम कक्षा –4 में पढ़ती है। इसके दो भाई व एक बहन हैं। छोटा भाई इसी विद्यालय में कक्षा–2 का छात्र है व बहन विद्यालय से लगे पूर्व माध्यमिक विद्यालय में कक्षा–7 में पढ़ती है। इसके पिता की मृत्यु चार वर्ष पहले हो गयी थी। माँ रिज़वाना बानो घरों में बर्तन धोने का काम करके किसी प्रकार अपना घर चलाती है। बहुत गरीबी में जी रही जैनम पढ़ने में अच्छी है। उसकी माँ की भी बड़ी इच्छा है कि बच्चे पढ़–लिख जायें। इसलिये वह बच्चों को प्रतिदिन विद्यालय समय से भेज देती हैं। श्रीमती रिज़वाना (ज़ैनम की माँ) बताती हैं कि वह रोज सुबह बच्चों को घर पर खाने की व्यवस्था नहीं कर पातीं; क्योंकि उसी वक्त उन्हें घरों में काम करने जाना पड़ता है। वैसे भी इस महँगाई में बच्चों का दोनों समय का खाना जुटा पाना उनके लिये बहुत कठिन है। हमारे लिये विद्यालय जैसा खाना बच्चों को देना मुमकिन नहीं होता। घर पर तो हम लोग रूखा–सूखा खाना ही खाते हैं। यह तो अल्लाह का शुक्र है कि मेरे बच्चों को कम से कम एक बार का अच्छा भरपेट भोजन स्कूल में मिल जाता है और बच्चे कभी बीमार नहीं पड़ते।

जिला नगरीय विकास प्राधिकरण (डूडा) की स्थापना प्रत्येक जनपद में राज्य के सोसाइटी एक्ट 1860 के अन्तर्गत की गयी है। जनपद स्तर पर जिलाधिकारी अध्यक्ष, मुख्य विकास अधिकारी उपाध्यक्ष एवं विभिन्न विभागों के अधिकारीगण, जनप्रतिनिधि, स्थानीय निकायों के चुने अध्यक्ष तथा निर्धन समुदाय से चुनी सामुदायिक विकास समिति (सी0डी0एस0) की अध्यक्ष महिलाएँ प्राधिकरण की सदस्य होती हैं। सी0डी0एस0 का प्रमुख दायित्व समुदाय की शिक्षा व्यवस्था विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा, डूडा एवं अन्य विभागों द्वारा संचालित समस्त योजनाओं का महिलाओं को लाभ दिलाना है।

इसी आशय से बाराबंकी के नगरीय क्षेत्र के समस्त 26 प्राथमिक विद्यालयों तथा 6 पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में मध्याह्न–भोजन वितरण व्यवस्था का कार्य 'डूडा' को सौंपा गया है; जिसका संचालन दो सी0डी0एस0 की महिला अध्यक्ष श्रीमती उषा श्रीवास्तव एवं श्रीमती कृष्णा चौधरी के सहयोग से किया जा रहा है।

''जो रब वही राम'' का अनुपम उदाहरण

4

शासन की विकेन्द्रित प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में ग्राम–सभा स्तर पर विद्यालय में भोजन वितरण–व्यवस्था का कार्य ग्राम पंचायतों को दिया गया है। इस योजना को प्रभावी ढंग से संचालित करने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व ग्राम–प्रधानों और ग्राम–पंचायतों का है। बाराबंकी जनपद के देवा ब्लाक में प्राथमिक विद्यालय, सलारपुर की प्रधानाध्यापिका श्रीमती शमीम रेहाना बहुत ही सक्रिय महिला हैं। विद्यालय में कुल 133 बच्चें है जिनमें 65 छात्राएँ व 67 छात्र हैं। विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति लगभग 70–80 प्रतिशत रहती है। भवन भी सुन्दर बना है; जिसकी साफ–सफाई का स्तर बहुत अच्छा है।

विद्यालय के बच्चों में स्वच्छता का व्यवहार विकसित हो इस आशय से दाँत–ब्रश, मंजन, साबुन, तेल–कंघी, तौलिया, शीशा आदि की व्यवस्था की गई है। पानी पीने के लिये विद्यालय प्रांगण में नल लगा है, शौचालय भी बने हैं जो उपयोग में रहते हैं। सामान्यतः बच्चे साफ–सुथरे होकर विद्यालय आते हैं। विद्यालय के बच्चों, उनके अभिभावकों व समुदाय के अन्य लोगों से बातचीत करने के उपरान्त ज्ञात हुआ कि पिछले बहुत दिनों से ऐसा कभी नहीं हुआ कि बच्चों को विद्यालय में भोजन न परोसा गया हो। भोजन प्रतिदिन बदल–बदल कर मेनू के अनुसार दिया जाता है, जिसमें गाँव के लोग अपना समय निकाल कर सहयोग करते हैं। विद्यालय में खाने में प्रयोग की जाने वाली खाद्य सामग्री की गुणवत्ता अच्छी रहती है। कभी भी खुले मसाले या तेल का उपयोग नहीं किया जाता है और खाने में टाटा का आयोडाइज्ड नमक ही उपयोग करते हैं। प्रधान श्री राम नरेश जी का कहना था कि जैसे खाद्य सामग्री हम अपने घरों में साफ करके रखते हैं, उसी तरह स्कूल में साफ करके रखी जाती है। भोजन में ताजी, हरी–भरी मौसम के अनुसार सब्जियों का उपयोग कर उसे सुपाच्य भी बनाते हैं। माह के अन्त में बची खाद्य सामग्री का उपयोग कोटा मिलने में देरी होने पर कर लिया जाता है, जिससे विद्यालय में भोजन की नियमितता बनी रहती है और बच्चों को स्कूल में निरन्तर भोजन मिलता रहता है।

इस विद्यालय में बच्चों की एक समिति का गठन हुआ है, जिसे स्थानीय भाषा में ''बच्चों की सरकार'' कहा जाता है। जिसके अर्न्तगत बच्चों को मंत्रीपद जैसे खाद्य मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, पर्यावरण मंत्री के अलग–अलग दायित्व सौंपे गये हैं। खाद्य मंत्री का यह दायित्व होता है कि वह यह देखे कि बच्चे खाना खाने से पहले हाथ धोते हैं, सही तरीके से बैठ कर खाना खाते हैं, रसोई में साग–सब्जी एवं अन्य खाद्य सामग्री को सही ढंग से धोकर उपयोग किया गया है, खाना ढककर रखा गया है आदि–आदि। इसमें बच्चे अपनी जिम्मेदारियों का निर्धारण पूरी कुशलता, उत्साह एवं लगन के साथ करते हैं। भोजन शुरू करने से पूर्व सभी बच्चे पंक्तिबद्ध खड़े हो जाते हैं। एक–एक बच्चा साबुन से हाथ धोता है। विद्यालय में बच्चों के हाथ पोंछने के लिये तौलिया भी रहता है। भोजन करने के लिये विद्यालय में एक कक्ष निर्धारित है, जिसमें बच्चे बैठकर मंत्रोच्चारण के उपरान्त भोजन प्रारम्भ करते हैं। अध्यापकों के इस प्रकार के व्यवहार से बच्चों में सहिष्णुता का दृष्टिकोण पैदा होता है और उनमें एक दूसरे के धर्मों के प्रति आदर की भावना पैदा होती है। विद्यालय की व्यवस्था को देखकर यही कहा जा सकता है कि हमारी भारतीय संस्कृति एवं देवा के प्रसिद्व सूफी सन्त हाजी वारिस अली शाह की सूक्ति **''जो रब वही राम ''** चरितार्थ होती है।

इस विद्यालय की व्यवस्था से ऐसा प्रतीत होता है कि अध्यापकों ने बच्चों को इस प्रकार से तैयार किया है कि वे स्व–अनुशासन की भावना से प्रेरित होकर व्यवहार करते हैं। विभाग के अधिकारियों से वार्ता के दौरान ज्ञात हुआ कि इस विद्यालय में मध्याह्न–भोजन के रजिस्टर पर विधिवत् विवरण अंकित किया जाता है। इस सबका श्रेय ग्राम–प्रधान श्री राम नरेश जी का ही है। विगत वर्ष श्री अजय चौहान, निदेशक, मध्याह्न–भोजन–योजना, उत्तर प्रदेश ने इस विद्यालय का निरीक्षण किया था। वे विद्यालय की व्यवस्था देखकर बहुत प्रसन्न हुये थे।

मध्याह्न–भोजन–योजना
झाँसी

(1) प्राथमिक विद्यालय,शारदा सदन, नगरक्षेत्र।
(2) प्राथमिक कन्या विद्यालय, पठकरका, ब्लाक–बंगरा।
(3) पूर्व माध्यमिक विद्यालय, कोटरा, ब्लाक–मऊरानीपुर।

सभी मनुष्य एक परमात्मा की समान सन्तान

5

महात्मा गाँधी जी का विचार था कि सभी मनुष्य एक परमात्मा की सन्तान हैं और बराबर हैं। ऊँच–नीच, जाति या धर्म के आधार पर किया जाने वाला भेद व्यर्थ है। झाँसी नगर क्षेत्र के गोलाकुआँ स्थित प्राथमिक विद्यालय, शारदा सदन में उनका यह विचार चरितार्थ होते देखा जा सकता है। प्रधानाध्यापक श्री लियाकत अली का यह मानना है कि उन्होंने अपने विद्यालय में बच्चों एवं उनके अभिभावकों के आचरण में कभी कोई भेद–भाव की भावना को नहीं देखा है। वे इस विद्यालय में वर्ष 2003 से कार्यरत है तब से अभिभावक संघ के सदस्य निरन्तर विद्यालय आते हैं और विद्यालय में निर्मित भोजन की गुणवत्ता एवं अन्य व्यवस्था के सुधार पर ध्यान देते हैं। स्थानीय सभासद श्री अरूण द्विवेदी के प्रयासों से विद्यालय में भोजन वितरण की निरन्तरता बनी रहती है क्योंकि वे खाद्य सामग्री, सब्जी–मसाले, चीनी, नमक, तेल आदि बाजार से खरीदने के लिए समय से पैसा उपलब्ध करा देते हैं। इस सत्र में अभी तक 86 दिनों में (24–10–2009 तक) ऐसा एक भी दिन नहीं हुआ कि बच्चों को विद्यालय में भोजन न परोसा गया हो। विगत वर्ष के सत्र में 191 दिन विद्यालय खुला था और सभी दिन बच्चों को मध्याह्न–भोजन वितरित किया गया था। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिलाधिकारी द्वारा अधिक सर्दी एवं गर्मी के दिनों में अवकाश घोषित कर देने के कारण विद्यालय पूरे 200 दिन नहीं खुल सके थे और क्योंकि चुनाव भी इसी वर्ष में था इसलिये विद्यालय कई दिन बन्द रहे थे। मध्याह्न–भोजन की सफलता का सबसे बड़ा श्रेय वे अभिभावकों व स्थानीय प्रशासन को देते हैं।

एक बुजुर्ग दम्पत्ति के विद्यालय में योगदान की चर्चा करते हुए श्री लियाकत अली (प्रधानाध्यापक) ने बताया कि श्रीमती हंस कुमारी जो विद्यालय के नजदीक में रहती हैं अक्सर बच्चों को विद्यालय आकर बिस्कुट, फल आदि बाँटती हैं। श्रीमती हंस कुमारी से मिलने पर ज्ञात हुआ कि वे वर्ष 2002 में मध्य प्रदेश के किसी प्राथमिक विद्यालय से सेवा निवृत्त होकर अपने पति के साथ मिलकर बाबा योग संस्थान नामक स्वैच्छिक संस्था चलाती हैं। इनके पति भी मध्य प्रदेश में हायर सैकण्डरी विद्यालय में अध्यापक थे और वे भी वर्ष 1987 में सेवा निवृत्त हो गये थे। विस्तार से वार्ता करने पर उन्होंने बताया कि उनके कोई सन्तान नहीं है एवं उन्हें बच्चों से बहुत लगाव है। धन की अथवा और किसी प्रकार की कोई कमी नहीं

है अतः वह इस प्रकार स्वेच्छा से विद्यालय में आकर सेवा कार्य करती हैं। श्रीमती हंस कुमारी का मानना है कि विद्यालय में खाना बड़ी साफ–सफाई के साथ बनता है। खाना पौष्टिक एवं स्वादिष्ट होता है। बच्चे पूरे अनुशासन के साथ खाना खाते हैं और इसमें पूरा सहयोग रसोइया श्रीमती लाली गायकवाड़ का रहता है। बच्चों को सदैव खाना खाने से पूर्व हैण्डपम्प पर लाईन लगाकर साबुन से हाथ धुलाया जाता है और तौलिये से हाथ पौंछकर सभी बच्चे खाने के लिये अपने बर्तन लेकर नियत स्थान पर बैठ जाते हैं। खाने के बाद बच्चे अपने बर्तन स्वयं धोकर रखते हैं। इससे उनमें अपना काम करने की आदत भी विकसित होती है। इस बुजुर्ग महिला का मत है कि अधिकांशतः विद्यालय में गरीब घरों के बच्चे आते हैं। बच्चों को विद्यालय में कम से कम एक बार भोजन प्राप्त होने से उनके माँ–बाप पर खाना जुटाने का दायित्व कम हो जाता है। घर के बाहर काम करने वाली माताओं को बच्चों के दोपहर के खाने की चिन्ता भी नहीं रहती। एक साथ बैठकर खाना खाने से बच्चों में मेल–जोल की भावना बढ़ती है।

इस विद्यालय में कुल 170 बच्चे हैं, जिनमें से 83 बालिकाएँ हैं व 87 बालक हैं। वर्ष 2007 में भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक ने विद्यालय का निरीक्षण किया था। तत्पश्चात् उन्होंने अपने प्रतिवेदन में इस बात का खास–तौर पर उल्लेख किया था कि प्राथमिक विद्यालय, शारदा सदन नगर क्षेत्र, झाँसी, प्रदेश के उन खास विद्यालयों में से है जहाँ योजना बहुत अच्छी तरह से क्रियान्वित की जा रही थी। बच्चों में वितरण किये जाने वाले भोजन की वान्छित मात्रा एवं उसकी गुणवत्ता का ध्यान अध्यापक दे रहे थे। वे स्वच्छता एवं स्वास्थ्यपरकता पर विशेष ध्यान दे रहे थे। विद्यालय में बच्चों की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य पर भी समुचित ध्यान दिया जा रहा था। बच्चों से वार्ता करने पर उन्होंने पाया था कि अधिकांश बालक–बालिकाएँ भोजन खाने से पूर्व अपने हाथ साबुन से धोते थे। सभी बच्चों ने बताया कि भोजन स्वादिष्ट होता है और वे उसे रुचिपूर्वक ग्रहण करते हैं। भोजन की गुणवत्ता, किचन के साफ–सुथरा रखने तथा स्वास्थ्यपरकता पर कड़ी नजर रखने की दृष्टि से अधिकारियों द्वारा पर्यवेक्षण का कार्य अत्यन्त प्रभावी ढंग से किया गया था।

बाल–पोषण एवं विद्यालयीय सौन्दर्यीकरण

6

झाँसी मुख्यालय से लगभग 70 कि0 मी0 दूर अम्बेडकर ग्राम पठाकरका ब्लाक बंगरा के अन्तर्गत आता है। इस गाँव में एक ही प्रांगण में तीन विद्यालय संचालित होते हैं जिनमें से एक प्राथमिक कन्या विद्यालय, एक बालकों के लिये प्राथमिक विद्यालय तथा एक बालक–बालिका दोनों के लिये पूर्व माध्यमिक विद्यालय बना है। तीनों विद्यालयों के अलग–अलग भवनों के साथ रसोई घर व स्टोर रूम बने हैं, लेकिन ग्राम–प्रधान श्री कृपेन्द्र सिंह तोमर तीनों विद्यालयों के बच्चों के लिये एक साथ भोजन बनवाते हैं। इससे समय व धन दोनों की बचत होती है और बच्चों को अधिक पौष्टिक एवं सुपाच्य भोजन मिल जाता है। इन तीनों विद्यालयों में कुल मिलाकर 391 बच्चे हैं, जिनमें से 175 बालिकाएँ व 216 बालक हैं। विद्यालय के प्रांगण में निर्मित एक कक्ष में आँगनबाड़ी केन्द्र भी चलता है जिसके बच्चों का पोषाहार स्वयं आंगनबाड़ी केन्द्र द्वारा तैयार कराया जाता है।

प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री हरनारायण पचौरिया ने जब 2006 में विद्यालय में पहली बार कार्यभार सँभाला तो प्रांगण में पर्याप्त स्थान देखकर उनके मन में विचार आया कि क्यों न विद्यालय को सुन्दर बनाने के लिये कुछ बागवानी की जाये। उन्होंने इस कार्य के लिये गाँव के निवासी मोतीलाल कुशवाहा जो बहुत गरीब एवं परिश्रमी व्यक्ति हैं, को अपनी ओर से रुपया 1000 प्रतिमाह देकर विद्यालय में बागवानी करने के लिये रखा। कुछ ही दिनों में विद्यालय की सुन्दरता में आये बदलाव को देखकर ग्राम–प्रधान श्री तोमर ने मोतीलाल को ग्राम–पंचायत की ओर से ही नियुक्ति कर दी। इसी बीच विद्यालय में भोजन बनाने वाली महिला रसोइया, जिसका पति दिल्ली में रहकर मजदूरी करता था, रसोइये का कार्य छोड़कर अपने पति के साथ चली गयी। अतः विद्यालय में मध्याह्न भोजन बनाने के लिए रसोइये की आवश्यकता पैदा हो गई। मोतीलाल की पत्नी केशर बाई जो अक्सर

विद्यालय के कार्य में उनका हाथ बटाती थीं, को रसोइये के रूप में विद्यालय में नियुक्ति मिल गयी। मोतीलाल और उसकी पत्नी केशर बाई मिलकर विद्यालय का भोजन बनाने लगे। इस कार्य के लिये दोनों को लगभग 2500 रूपये मिल जाते हैं और अक्सर ही खाना बच जाता है, तो यही खाना वह भी खा लेते हैं। इस तरह से उनका गुजारा सही तरह से हो रहा है। उक्त दम्पत्ति विद्यालय के प्रांगण में ही रहते हैं और मध्याह्न–भोजन बनाने और बर्तन आदि की साफ–सफाई के बाद अतिरिक्त समय में विद्यालय के किचन गार्डन में साग–सब्जी उगाते हैं और उसकी देख–रेख करते हैं। इनके तीन बेटे है, तीनों की शादी हो गयी है जो इनसे अलग रहते हैं और आत्म–निर्भर हैं।

मोतीलाल व उनकी पत्नी केशर बाई विद्यालय को मन्दिर समझकर इसकी साफ–सफाई करते हैं। विद्यालय के किचन गार्डन में विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ जैसे लौकी, तुरई, गोभी, कद्दू, मूली, हरी मिर्च, हरी धनिया, बैंगन, पालक, मैंथी आदि उगायी जाती हैं। बहुत कम दिन ऐसा होता हैं कि सब्जी बाहर से खरीदनी पड़े। केवल आलू बाजार से खरीदा जाता है। अधिक मात्रा में सब्जी पैदा होने पर उसे गाँव के लोगों को या स्थानीय बाजार में बेच दिया जाता है और इससे प्राप्त धन से कीटनाशक, बीज, खाद्य आदि खरीद लेते हैं। किचन का पानी तथा हैण्ड पम्प पर बर्तनों की धुलाई का बेकार पानी किचन गार्डन में सिंचाई के लिए उपयोग में लाया जाता है। इससे बेकार पानी में निहित पोषक तत्व पौधों/भूमि को उर्वरक के रूप में मिल जाते हैं और बेकार पानी के आस–पास इकट्ठा न होने के कारण वातावरण भी स्वच्छ बना रहता है। विद्यालय में सबमर्सिबल पम्प लगा है और बालक–बालिकाओं के लिये अलग–अलग शौचालय की सुविधा है।

विद्यालय की फुलवारी और किचन गार्डन देखकर विभागीय अधिकारी भी प्रसन्न होते हैं और इसकी चर्चा दूसरे विद्यालयों में जाने पर अवश्य करते हैं। वर्ष 2007 में तत्कालीन जिलाधिकारी श्री वेंकटेश्वर लू ने इस विद्यालय का निरीक्षण किया था। विद्यालय में किये गये प्रयासों को देखकर वे इतने प्रसन्न हुये थे कि इन्होंने इस विद्यालय में चहारदीवारी बनाने के लिये तत्काल धन आवंटन के आदेश जारी कर दिये थे। श्री एम देवराज ने जब जिले के जिलाधिकारी के रूप में कार्यभार सँभाला तो इस विद्यालय की प्रशंसा सुनकर वे भी यहाँ आने से अपने को नहीं रोक सके थे।

विद्यालय–प्रांगण में ''किचन गार्डन'' एवं फुलवारी से न केवल विद्यालय की सुन्दरता बढ़ी है वरन् सीमित साधनों से निर्मित मध्याह्न–भोजन की गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार हुआ है।

7

झाँसी जनपद में ब्लाक मऊरानीपुर के ग्राम कोटरा की प्रधान श्रीमती दुर्गा देवी कुशवाहा एक बुजुर्ग महिला हैं। उनका मानना है कि उनकी ग्राम–सभा में स्थित तीनों विद्यालयों में बच्चों को गुणवत्तापरक भोजन मिल रहा है। विद्यालय की भोजन व्यवस्था की देखभाल वे स्वयं रुचि लेकर करती हैं। ग्राम–सभा में स्थित सभी विद्यालयों में भोजन इन्हीं की देखरेख में बनता है। उनका कहना है कि वे जिस सम्मानित पद पर हैं, यदि वह अच्छे ढंग से अपने गाँव व ग्रामवासियों के लिए कार्य करती हैं तो इससे उनकी व उनके गाँव की प्रतिष्ठा बढ़ती है। पल्स पोलियो के दिवसों एवं अन्य राष्ट्रीय दिवसों के आयोजन के अवसर पर भी बच्चों को वे विद्यालय में विशेष प्रकार का व्यंजन बनवाकर बँटवाती हैं। विद्यालय में मध्याह्न–भोजन–व्यवस्था सुचारू रूप से बनाये रखना उनके, बच्चों के व अभिभावकों की आदत में आ गया है। वे एक ऐसी महिला हैं जो न केवल आत्म–विश्वास से भरी हैं बल्कि आत्मनिर्भर व स्वतंत्र हैं। वह स्वयं और समुदाय के विकास की दिशा में अपना और अपने जैसी कई महिलाओं का नेतृत्व करने में सक्षम हैं।

तीनों विद्यालयों में अलग–अलग दो–दो सिलेण्डर व गैस स्टोव उपलब्ध हैं, जिस वजह से अचानक गैस समाप्त होने पर खाना बनने में कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं होता और ऐसा कभी नहीं होता कि बच्चों को विद्यालय में खाना न मिले। प्रधानजी ने बताया कि उनके यहाँ खाद्य–निगम से खाद्य–सामग्री नियमित रूप से पहुँच जाती है। कोटेदार द्वारा स्कूलों को खाद्य सामग्री उपलब्ध कराई जाती है; लेकिन गाँव के विद्यालयों में सुरक्षा की सुविधा न होने की वजह से यह सामग्री हम अपने घर पर रखते हैं और रसोइये की सुविधा की दृष्ट से इसे साप्ताहिक रूप से विद्यालय में भिजवा देते हैं। विद्यालयों में किचन के साथ स्टोर करने की पर्याप्त सुविधा है; लेकिन चहारदीवारी न होने के कारण सामग्री के चोरी हो जाने की आशंका बनी रहती है। इसलिए इसे घर पर ही रखना उचित होता है।

विद्यालय की छात्रा दीपिका कक्षा–8 बताती है कि पहले जब विद्यालय में दोपहर का खाना नहीं मिलता था, बहुत से बच्चे बीच में पढ़ाई छोड़कर खाना खाने अपने घर चले जाते थे। उसके साथ भी जब कभी ऐसा होता था तो माँ घर पर उसे काम करने के लिए रोक लेती थी और दोबारा लौटकर उस दिन विद्यालय नहीं आती थी, जिससे उस दिन की उसकी पढ़ाई छूट जाती थी। विद्यालय में अच्छा भोजन मिलने से अब ऐसा कभी नहीं होता। सभी बच्चे पूरे दिन विद्यालय में रहते हैं और बीच में खाली समय में विद्यालय में खेलते हैं। शाम को घर जाकर यदि आवश्यकता होती

है तो वह माता–पिता के कार्य में सहयोग करती है और घर पर पढ़ती भी है। पढ़ना–लिखना अब उसे बहुत अच्छा लगने लगा है।

प्रधान जी का मानना है कि गाँव में बालिकाओं की शिक्षा में लगातार सुधार हो रहा है और यही कारण है कि विद्यालय में लड़कों के सापेक्ष लड़कियों की संख्या अधिक है। जिसका प्रमाण है कि पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोटरा में कुल 180 बच्चे हैं, जिनमें से 96 लड़कियाँ व 84 लड़के हैं। उन्होंने बताया कि आरम्भ में जब कभी गेंहूँ/चावल अच्छी क्वालिटी का नहीं होता था तो वे स्वयं कोटेदार के पास जाकर वापस कर देती थीं। लेकिन विगत 2 वर्षों से जबसे सेम्पलिंग का कार्य प्रभावी हो गया है, इस प्रकार की समस्या नहीं आयी है। समय–समय पर अधिकारियों के विद्यालय में भ्रमण के दौरान उन्हें नई–नई जानकारियाँ मिलती रहती हैं और अच्छे ढंग से काम करने हेतु मार्ग दर्शन एवं प्रेरणा भी प्राप्त होती है।

सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी, मऊरानीपुर श्रीमती बिमला वर्मा ने बताया कि निर्धारित प्रक्रिया के अन्तर्गत अधिकारियों द्वारा अनुश्रवण करते रहने के कारण योजना से जुड़े कार्यान्वयनकर्ता सजग रहते हैं और अपेक्षाकृत पहले से अधिक संवेदनशील हो गये हैं। विधिवत् अनुश्रवण के लिये अधिकारियों को क्षेत्र का नियमित दौरा करना पड़ता है। अधिकारियों के अनुश्रवण हेतु किये गये भ्रमण के दौरान कार्य की निगरानी के साथ–साथ मार्ग–दर्शन किये जाने का कार्य किया जाता है। फेयर एवरेज क्वालिटी की मंशा के तहत उठाये गये खाद्यान्न के संयुक्त निरीक्षण की व्यवस्था जिला पूर्ति अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी तथा खाद्य निगम के जिला–प्रबन्धक करते हैं। तहसील तथा ब्लाक स्तरीय अधिकारी भी माह में कम से कम एक बार अवश्य प्रत्येक विद्यालय का निरीक्षण करते हैं। सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी विद्यालय में तैयार किए जाने वाले भोजन का क्रमवार आकस्मिक निरीक्षण करते हैं। निरीक्षण की आवृत्ति अधिक होने के कारण भी योजना के क्रियान्वयन पर अनुकूल प्रभाव पडा है।

झाँसी जनपद के समस्त ग्राम–प्रधानों को मध्याह्न–भोजन–योजना से सम्बन्धित विभिन्न विषयों की जानकारी देने एवं योजना से जुड़े तथ्यों से अवगत कराने के उद्देश्य से दिनांक 25–09–09 को मुख्यालय स्तर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला में जिलाधिकारी के अतिरिक्त सी.डी ओ., डी.पी. आर.ओ., सी.एम.ओ., ए.बी.एस.ए., नगर आयुक्त एवं समस्त ग्राम पंचायत अधिकारियों ने प्रतिभाग किया था। कार्यशाला के माध्यम से मध्यान्ह भोजन से सम्बन्धित विभिन्न कठिनाईयों के निराकरण एवं योजना के संचालन में सुधार हेतु किये जाने वाले प्रयासों पर चर्चा की गयी थी। इस दौरान जिला समन्वयक (मध्याह्न भोजन) द्वारा तैयार योजना से सम्बन्धित एक पत्रक का वितरण किया गया था। जिलाधिकारी महोदय ने जनपद स्तरीय टास्क फोर्स के अधिकारियों को प्रत्येक माह उन्हें आवंटित विद्यालयों का निरीक्षण कर निरीक्षण आख्या समय से भेजने के निर्देश दिये; जिससे कि निरीक्षण में प्राप्त वस्तुस्थिति के अनुरूप यथाशीघ्र कार्यवाही सुनिश्चित की जा सके।

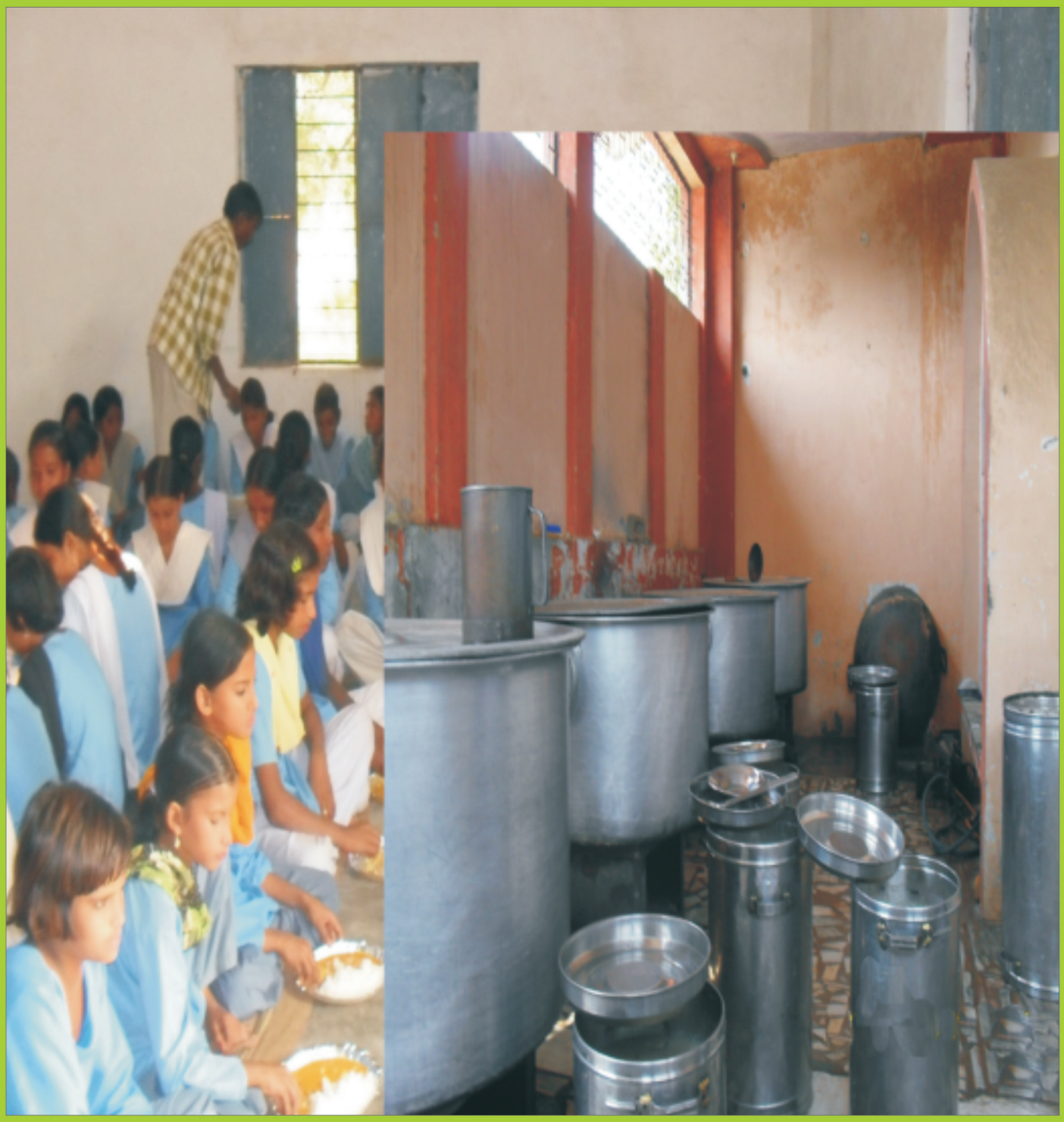

मध्याह्न-भोजन-योजना
मुरादाबाद

(1) प्राथमिक विद्यालय, अगवानपुर, ब्लाक–मुरादाबाद।
(2) प्राथमिक विद्यालय, मथाना, ब्लाक–छजलैट।
(3) प्राथमिक विद्यालय, मझोलापुर, नगरक्षेत्र।

8

जनपद मुरादाबाद में ग्राम सराय अगवानपुर एक बहुत बड़ा गाँव है। इसकी आबादी 30000 से भी अधिक है। ग्राम-प्रधान श्रीमती ममता गुप्ता एक पढ़ी-लिखी जागरूक महिला हैं। इनके पति का अच्छा व्यवसाय है और वे बहुत व्यस्त रहते हैं, फिर भी विद्यालय भोजन की व्यवस्था सुचारू रूप से चले इसके लिए उनका पूरा सहयोग रहता है। दैनिक समाचार पत्र ''अमर उजाला'' के स्थानीय संवाददाता श्री रजा नकवी बताते हैं कि इस तथ्य को वे कई बार समाचार पत्र में प्रकाशित कर चुके हैं। उनका कहना था कि जब-जब अधिकारी यहाँ निरीक्षण करने आये हैं उन्होने गाँव के चारों विद्यालयों की भोजन व्यवस्था को अच्छा पाया है। इसमें सबसे अहम् बात यह है कि भोजन बनाने एवं उसे बच्चों को खिलाने में पूरी स्वच्छता का ध्यान रखा जाता है। इस पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है कि सभी बच्चे हाथ साफ करने के बाद ही खाना खायें।

गाँव में तीन प्राथमिक विद्यालय तथा एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय है। चारों विद्यालयों की भोजन व्यवस्था बहुत अच्छे ढंग से चल रही है। पूर्व माध्यमिक कन्या विद्यालय को छोड़कर बाकी तीनों विद्यालयों में खाना अलग-अलग बनता है। इसका कारण विद्यालय में अभी गैस कनेक्शन का उपलब्ध न हो पाना है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय तथा प्राथमिक विद्यालय अगवानपुर (प्रथम) एक ही परिसर में स्थित हैं; अतः दोनों विद्यालयों का खाना एक ही रसोई में बनता है। विद्यालय में बनी रसोई की एक विशेषता है कि इसमें उपयुक्त ऊँचाई पर खिड़की बनी है जिससे बच्चे स्वयं लाईन लगाकर अपने बर्तनों में खाना ले लेते हैं। रसोई में सुरक्षा की दृष्टि से भी यह खिड़की बहुत उपयुक्त है।

दोनों विद्यालयों में कुल 782 बच्चे हैं, जिनमें से पूर्व माध्यमिक कन्या विद्यालय में 192 व प्राइमरी विद्यालय में 335 छात्रायें हैं। छात्राओं के नामांकन से यह स्पष्ट है कि गाँव के लोग बालिकाओं की शिक्षा में पर्याप्त रुचि ले रहे हैं। भोजन बनाने के लिए तीन महिलायें श्रीमती इरशादी, श्रीमती शन्नो और श्रीमती मंजू व एक पुरूष नियुक्त हैं। चारों रसोईया गरीब व पिछड़ी जाति के हैं। इनमें से दो महिला रसोईया श्रीमती इरशादी व शन्नो के पतियों की मृत्यु हो गई है। पुरुष-रसोइया श्री रवीन्द्र सिंह खाना बनाने के बर्तनों को साफ करने में सहयोग करने के साथ-साथ बाहर का भी सभी कार्य (गेंहूँ पिसवाना, सब्जी खरीदकर लाना, गैस सिलेण्डर भरवाकर लाना आदि) करता है। ग्राम-प्रधान महोदया विद्यालय भोजन से सम्बन्धित जो भी आवश्यकता होती है, उसे पूरा करने में किसी प्रकार का विलम्ब नहीं करती हैं। यदि जनपद से धनराशि मिलने में

देरी हो जाती है, तब भी मध्याह्न–भोजन की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाये रखा जाता है। विगत सत्र में एवं इस सत्र में एक भी दिन ऐसा नहीं हुआ कि बच्चों को विद्यालय में भोजन न मिला हो।

प्रधानाध्यापिका श्रीमती सुशीला सादमान ने छात्र मुकीम कक्षा–5 तथा बबलू कक्षा–3 से मिलवाया। मुकीम व बबलू दोनों सगे भाई हैं और इसी विद्यालय के छात्र हैं। इनकी बहन रूबी भी कक्षा–5 की छात्रा है तथा एक अन्य भाई गाँव के प्राइवेट विद्यालय में पढ़ता है। इन बच्चों के पिता की मृत्यु दो वर्ष पहले हो गयी थी। पिता की मृत्यु के बाद माँ निरोजा खातून ने दूसरी शादी करली और इन बच्चों को छोड़कर अलग नये पति के साथ रहने लगी। बच्चों का एक बड़ा भाई और भी है, जिसकी शादी हो गयी है और उसके भी दो छोटे–छोटे बच्चे हैं। माँ की इस हरकत के बाद चारों बच्चों के पालन–पोषण की जिम्मेदारी बड़े भाई व भाभी पर आ गयी है, जो किसी प्रकार मजदूरी करके घर चलाते हैं। मुकीम व बबलू बहुत समझदार बच्चे हैं व पढ़ाई भी मन लगाकर करते हैं। बच्चों का कहना था कि जिस दिन विद्यालय बन्द रहता है उस दिन हमें भरपेट खाना भी नहीं मिल पाता। स्कूल के खाने का स्वाद इतना अच्छा होता है कि वैसा खाना हमें घर पर नसीब नहीं होता। अध्यापकों ने बताया कि बच्चों के भाई–भाभी उन्हें पूरा प्यार देते हैं लेकिन पारिवारिक हालात इतने खराब हैं कि बच्चों को यदि विद्यालय में खाना न मिले तो वह भूखे ही रह जायें । विद्यालय से इन बच्चों को वजीफा मिल जाता है, किताबें मिल जाती हैं और एक बार भरपेट भोजन भी मिल जाता है। बच्चे प्रतिदिन विद्यालय आते हैं और मन लगाकर पढ़ते हैं। ऐसे गरीब बेसहारा बच्चों के लिये विद्यालय का भोजन एक वरदान की तरह है।

बच्चों की जिज्ञासाः भोजन मिलने की आशा

मुरादाबाद जनपद के ब्लाक छजलैट में पूर्व माध्यमिक विद्यालय तथा प्राथमिक विद्यालय मथाना एक ही परिसर में संचालित हैं। दोनों के अलग–अलग भवन हैं और खेलने के लिए बड़ा खेल का मैदान है। प्राथमिक विद्यालयों में 102 तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालय में कुल 267 छात्र–छात्रायें हैं। छात्राओं की संख्या दोनों ही विद्यालयों में छात्रों से अधिक है। विद्यालय परिसर में दो आँगनवाड़ी केन्द्र भी हैं। कई छोटे बच्चे अपने भाई–बहनों के साथ विद्यालय आते हैं और उनके साथ वे भी ताजा खाना खा लेते है। आंगनबाड़ी के इन छोटे बच्चों को भी विद्यालय का ताजा व सुपाच्य गरमा–गरम भोजन बहुत अच्छा लगता है।

ग्राम–प्रधान श्री दिनेश कुमार चौहान बताते हैं कि विद्यालय में बहुत से ऐसे भी बच्चे हैं जिन्हें घर पर सुबह का नाश्ता तक नहीं मिलता और वे वगैर कुछ खाये–पीये विद्यालय आ जाते हैं। ऐसे बच्चों को समय पर विद्यालय में खाना मिल जाता है। ये बच्चे विद्यालय में इस जिज्ञासा के साथ आते हैं कि उन्हें अच्छा भोजन मिलेगा। कुछ बच्चे तो ऐसे भी हैं, जिन्हें एक दिन भी विद्यालय में देरी से भोजन मिले तो वे रोने लगते हैं। बच्चों की इस उम्र में जल्दी भूख लगती है। गरीब परिवार के बच्चे जिनके माता–पिता सुबह घर से काम पर निकल जाते हैं या उनकी मातायें सुबह खाना बना कर नहीं दे पातीं, विद्यालय में भोजन सुविधा की वजह से वे समय पर विद्यालय आ जाते हैं और बीच में विद्यालय छोड़कर घर वापस नहीं जाते है। इससे उनकी पढ़ाई में व्यवधान नहीं होता। उनका कहना है कि गाँव में जब कभी किसी सम्पन्न परिवार में शादी विवाह का अवसर होता है तो वे बच्चों के लिये विवाह में निर्मित पकवान, मिठाइयाँ अवश्य वितरित कराते हैं। इससे गाँव में एक परम्परा सी बनती जा रही है और लोग स्कूल में बच्चों को कुछ खिलाने–पिलाने में अपनी शान महसूस करने लगे हैं। इस प्रकार की परिपाटी का असर केवल बच्चों की सेहत पर ही नहीं पड़ता, बल्कि लोगों में एक दूसरे को सहयोग करने के साथ सामाजिक सौहार्द का वातावरण भी पैदा होता है।

प्राथमिक विद्यालय, भीकमपुर द्वितीय की एक घटना की चर्चा करते हुए श्री कुंवर पाल सिंह, न्याय पंचायत संसाधन समन्वयक बताते हैं कि एक दिन गैस समाप्त हो जाने के कारण विद्यालय में भोजन नहीं बना। विद्यालय की एक छात्रा महरूम निशा जो कक्षा–3 की छात्रा है, निराश होकर भूख के कारण रोने लगी। बाद में ज्ञात हुआ कि वह घर से कुछ भी खाकर नहीं आयी थी। महरूम निशा का एक छोटा भाई और एक बहन भी है। उनकी माँ की मृत्यु के बाद पिता ने दूसरी शादी कर ली है। सौतेली माँ इन बच्चों का बिल्कुल ख्याल नहीं रखती है और उन्हें समय से कभी खाना नहीं देती है, जिस वजह से वह अक्सर सुबह घर से कुछ खाकर नहीं आती है। विद्यालय का भोजन उसके लिए बहुत बड़ा सहारा है। महरूम निशा की तरह हमारे विद्यालय में कितने ही ऐसे छात्र होंगे, जिन्हें गरीबी के कारण तरह–तरह की समस्याएँ होती हैं, जिनमें से खाने की समस्या प्रमुख है। एक बार ही सही यदि बच्चों को विद्यालय में भरपेट स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन मिल जाता है तो इसका असर उनके मन–मस्तिष्क पर ही नहीं, बल्कि शिक्षा पर भी पड़ता है।

उन दिनों जब विद्यालय में मध्याह्न भोजन नहीं मिलता था अध्यापकों को बच्चों के नामांकन के लिए घर–घर जाना पड़ता था। आज स्थिति यह है कि अभिभावक स्वयं अपने बच्चों की अंगुली पकड़ कर लाते हैं और विद्यालय में दाखिला कराते हैं।

स्वैच्छिक संगठनों का योगदान

10 मुरादाबाद जनपद के नगर क्षेत्र में मध्याह्न–भोजन तैयार कर विद्यालय तक पहुँचाने का कार्य जिला प्रशासन द्वारा चार स्वैच्छिक संस्थाओं को सौंपा गया है। सुप्रभात एजुकेशनल एण्ड वेलफेयर सोसाइटी, नई दिल्ली नगर क्षेत्र के 20 परिषदीय विद्यालयों व चार ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय जो शहर से लगे हैं, के लगभग 3000 बच्चों का भोजन केन्द्रीयकृत किचन में तैयार कर मारूति वैन में रखकर विद्यालयों में पहुँचाती है। संस्था यह कार्य विगत तीन वर्षों से कर रही है। मध्याह्न–भोजन बनाने एवं उसे विद्यालयों तक पहुँचाने का कार्य बहुत ही सुनियोजित तरीके से किया जाता है, जिससे कि बच्चों को समय से विद्यालयों में भोजन उपलब्ध हो सके। केन्द्रीयकृत किचन की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए संस्था ने आठ लोगों को नियुक्त किया है। जिनमें एक हैडकुक वे उसके दो सहायक हैं। खाद्यान की साफ–सफाई, सब्जी काटने/छीलने के कार्य के लिए एक महिला को नियुक्त किया गया है। किचन एवं बर्तनों की सफाई के लिए दो लोग लगाये गये हैं और खाना स्कूल तक पहुँचाने के लिए दो अलग लोग नियुक्त हैं। किचन का संचालन शहर में स्थित एक बड़े से किराये के भवन में होता है, जिसमें हैडकुक व अन्य कर्मचारियों के रहने की उचित व्यवस्था है। भवन का किराया रू0 4000 प्रतिमाह है। कर्मचारियों के लिए 900 रूपये से लेकर 4000 रूपये तक का वेतन निर्धारित है। इस प्रकार कुल मिलाकर रसोई कर्मियों के वेतन पर लगभग रू0 20000 प्रतिमाह व्यय किया जाता है। दो वैन जिससे विद्यालय में भोजन वितरित होता है उस पर भी लगभग रू0 10000 प्रतिमाह खर्च होते हैं।

खाना बनाने के लिए संस्था के पास छः सिलेण्डर, चार चूल्हा बर्नर, 37 छोटे स्टील के ड्रम (32 किलो भण्डारण क्षमता के), सात बड़े ड्रम (60 किलो भण्डारण क्षमता के), एक इलेक्ट्रॉनिक तराजू, बडी कढाई एवं अन्य बर्तन आदि उपलब्ध हैं। खाद्य सामग्री के भण्डारण के लिए अलग से स्टोर रूम भी है। खाना बनाने एवं बर्तन आदि धोने के लिए किचन में पर्याप्त पानी की व्यवस्था है। संस्था की ओर से दिन–प्रतिदिन की व्यवस्था श्री मनोज कुमार करते हैं। उनका कहना था कि वे खाने में बच्चों की रुचि व पसन्द का विशेष ध्यान रखते हैं। बदल–बदल कर प्रतिदिन सब्जी बनवाते हैं, जिसमें आलू, पत्ता गोभी, अदरक, हरा धनिया, हरी मिर्च का इस्तेमाल अवश्य होता है। बच्चे लौकी डाली हुई सब्जी पसन्द नहीं करते हैं। चने की दाल डाली हुई सब्जी ज्यादा पसन्द करते हैं। उनकी कोशिश रहती है कि भोजन में अधिक से अधिक सुधार हो, चाहे वह सफाई की दृष्टि से हो अथवा भोजन की गुणवत्ता में। उनका कहना था कि

ऐसा लगता है कि बच्चों की सेवा करने का इस प्रकार का अवसर हमें जीवन भर मिलता रहे। इस सत्र में ऐसा एक भी दिन नहीं हुआ कि बच्चों का खाना न बना हो।

संस्था द्वारा विद्यालयों को उपलब्ध कराये गये भोजन की गुणवत्ता एवं अन्य व्यवस्था के सन्दर्भ में अध्यापकों, बच्चों एवं उनके अभिभावकों से विचार जानने के लिए सम्पर्क किया गया। प्राइमरी विद्यालय मझोला नगर क्षेत्र की अध्यापिका श्रीमती उषा देवी ने बताया कि बच्चों का खाना सामान्यतः समय से स्कूल में आ जाता है और हम उसका वितरण करा देते हैं। खाना पर्याप्त होता है और स्वाद की दृष्टि से अच्छा होता है। बच्चे बड़े चाव से खाते हैं। भोजन के मैनू में प्रत्येक सप्ताह चार दिन चावल आधारित भोजन तथा दो दिन गेहूँ आधारित भोजन बच्चों को दिया जाता है। इस व्यवस्था में अध्यापकों को भोजन कार्य से इतर रखा गया है। भोजन में थोड़ी–सी भी कमी होने पर हम संस्था के प्रतिनिधि को टोक देते हैं। विद्यालय में ऐसे बहुत से बच्चे हैं, जिनकी माँ घरों में झाड़ू–पोंछा करती हैं या फिर फैक्टरी में काम करती हैं। वे जब शाम को पाँच–छः बजे तक घर पहुँचती हैं, तभी बच्चों को खाना दे पाती हैं। विद्यालय में दोपहर का खाना मिलने से बच्चों को बहुत देर तक भूखा नहीं रहना पड़ता और उन्हें पर्याप्त पोषण मिल जाता है। भोजन यदि बचता है तो बच्चों को दोबारा दे देते हैं।

रजनी व स्वाती दो बहनें इसी विद्यालय में कक्षा–एक की छात्रा हैं। स्वाती बहुत चुलबुली लड़की है। वह बताती है कि उसके पिता अक्सर बीमार रहते हैं और कोई काम नहीं करते । माँ किसी बड़े दफ्तर में पानी पिलाने का काम करती है। माँ को माह में 600 रुपये मिलते हैं। बड़ा भाई भी प्राइवेट कम्पनी में काम करता है। उसको कभी काम मिलता है, कभी काम नहीं भी मिलता। हमारी मैम (प्रधानाध्यापिका) इतनी अच्छी हैं कि अगर खाना बच जाता है तो हमें दोबारा दे देती हैं यह सोचकर कि मम्मी ने घर पर खाना बनाया भी होगा कि नहीं। इसी विद्यालय का एक छात्र सचिन कक्षा–चार में पढ़ता है। उसकी माँ शकुन्तला किसी कोठी में झाड़ू–पोंछा करके गुजर–वसर करती है। पति की मृत्यु हो गई है । शकुन्तला बताती हैं कि उसके तीन बच्चे कुपोषण के कारण कम उम्र में ही मर गये थे। अपने एकमात्र बच्चे सचिन को वह खूब पढ़ाना चाहती हैं, जिससे कि वह पढ़–लिख कर अच्छा काम कर सके। विद्यालय में मिलने वाले भोजन तथा अन्य सहायता से वह बहुत संतुष्ट है। वह बताती है कि विद्यालय में अध्यापिकायें उसके बच्चे के खाने का पूरा ख्याल रखती हैं और ऐसा कभी नहीं होता कि उसका बच्चा बिना खाना खाये स्कूल से घर आता हो। इस विद्यालय की एक विशेषता यह भी है कि यहाँ के बच्चे इसी प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में ही बने पूर्व माध्यमिक विद्यालय में आठवीं तक की शिक्षा अवश्य पूरी करते हैं।

मध्याह्न-भोजन-योजना
वाराणसी

(1) कृष्ण मोहिनी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लहरतारा, नगरक्षेत्र।
(2) प्राथमिक विद्यालय, रामनगर, नगरक्षेत्र।
(3) प्राथमिक विद्यालय, लोहटा, ब्लाक–काशी विद्यापीठ।

त्याग और सत्यनिष्ठा का उदाहरण

11

वाराणसी नगर क्षेत्र में 22 सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय हैं। इन सभी विद्यालयों के बच्चों को परिषदीय विद्यालय की भाँति मध्याह्न–भोजन का प्राविधान है। कृष्ण मोहिनी के नाम से लोकप्रिय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लहरतारा एक बहुत अच्छा सरकार द्वारा अनुदानित विद्यालय है, जिसमें मध्याह्न–भोजन की व्यवस्था विद्यालय के मैनेजर तथा अभिभावक संघ के सदस्य मिलकर करते हैं। विभाग द्वारा देय भोजन की परिवर्तन लागत इनके संयुक्त हस्ताक्षर से संचालित खाते में हस्तान्तरित कर दी जाती है। खाद्यान्न की उठान कोटेदार से प्रतिमाह एक साथ की जाती है। विद्यालय के मैनेजर श्री राय अजय कुमार पूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के साथ पायलट रह चुके हैं। दिवंगता श्रीमती कृष्ण मोहिनी, जिनके नाम से यह विद्यालय है, शांति निकेतन में श्रीमती इन्दिरा गांधी की सहपाठिनी एवं घनिष्ठ मित्र थीं।

प्रधानाध्यापक श्री डंगर प्रसाद यादव बताते हैं कि विद्यालय में कुल 562 बच्चे हैं। इन बच्चों को देश एवं समाज के प्रति उत्तरदायी बनाना ही हमारा परम लक्ष्य एवं उपलब्धि है। उनके लिए शिक्षा व्यापार नहीं, बल्कि त्याग और सत्यनिष्ठा का प्रतीक है। विद्यालय में अधिकांशतः गरीब परिवारों के बच्चे पढ़ते हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग के बालक–बालिकाओं का स्वतंत्रतापूर्वक सर्वांगीण विकास करना विद्यालय का मुख्य उद्देश्य है। बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन यह ध्यान में रखकर तैयार कराया जाता है कि उन्हें भोजन में पूरे पोषक तत्व मिल सकें।

विद्यालय का भोजन मैनेजर साहब के भवन के प्रांगण में अलग से बने एक बड़े कक्ष में तैयार होता है। खाद्यान्न स्टोर करने के लिए भी एक बहुत बड़ा साफ–सुथरा कक्ष है, जिसमें खाद्यान्न तोलने की भी व्यवस्था है। गेहूँ–चावल साफ करके एक बड़े से टिन के ड्रम में रखा जाता है और प्रतिदिन आवश्यकता के अनुरूप उसमें से निकाल कर रसोइया को दे दिया जाता है। खाना बनाने के लिए एक कुक व दो उसके दो सहायक नियुक्त किए गये हैं। रसोई से गरमागरम खाना ले जाकर विद्यालय के दो कर्मचारी बच्चों को विद्यालय में वितरित करते हैं। रसोई में खाना बनाते समय निगरानी के लिए दो लोग–एक विद्यालय कमेटी का सदस्य तथा एक अभिभावक संघ का सदस्य अवश्य उपस्थित रहते हैं। विद्यालय में 50–60 बच्चे तो ऐसे हैं जो दो–दो बार खाना लेते हैं। कक्षा–7 की छात्रा मधुभारती तथा कक्षा–8 का छात्र असलम

अंसारी कहते हैं कि स्वाद के लिहाज से विद्यालय का खाना बहुत अच्छा होता है और ऐसा खाना उनको घर पर भी नहीं मिलता। इनकी एक बहन व भाई ममता व शाहरूख अंसारी इसी विद्यालय में पढ़ते हैं। मधु की माँ घरों में बर्तन माजने का काम करके तथा असलम की माँ कपड़ों की सिलाई का कार्य करके किसी प्रकार से अपने परिवार का भरण–पोषण करती है। खाना इतना पौष्टिक तथा स्वादिष्ट होता है कि जनपद में ही नहीं, प्रदेश में यह विद्यालय ऐसा विद्यालय हो सकता है, जहाँ इतना अच्छा भोजन बच्चों को परोसा जाता है। यह कहना है–विद्यालय के व्यवस्थापक श्री कृपा शंकर जी का। वे बताते हैं कि भोजन की पौष्टिकता के साथ–साथ स्वच्छता एवं शुद्ध पेयजल का इतना अधिक महत्व है कि यदि इसमें किसी प्रकार की कमी होती है तो भोजन की गुणवत्ता का कोई मतलब नहीं रह जाता। यदि बच्चों को सुपाच्य एवं पौष्टिक आहार के साथ शुद्ध पेयजल न मिले और उनकी आदतों में स्वच्छता का व्यवहार न हो तो भोजन पौष्टिक होने का कोई अर्थ नहीं होता। इस दृष्टि से हमारा प्रयास होता है कि बच्चे भोजन करने से पूर्व साबुन से हाथ धोने का महत्व समझें और स्वच्छतापूर्ण आचरण को व्यवहार में अपनायें।

रसोईये सदैव अपने घर से नहा–धोकर साफ कपड़े पहनकर आते हैं। उन्हें खाना बनाते समय कपड़ों के ऊपर पहनने के लिये ''ऐपरन'' दिये गये हैं। शुद्ध पेय जल के लिए विद्यालय में उपयुक्त व्यवस्था की गई है। आगे वह बताते हैं कि विद्यालय में निरीक्षण के लिए जब भी अधिकारी आये हैं, तब उन्होंने खाने की प्रशंसा की है। खाना उनके मुताबिक बेहद सादा, विविधता भरा होता है। तड़का लगी दाल गरमागरम चावलों के साथ बच्चे बड़े चाव से खाते हैं। साथ ही पौष्टिकता का भी समावेश होता है। वह चाहे तहरी हो, दाल–चावल हों, रोटी–सब्जी हो अथवा दलिया या खीर हो बच्चे इन सभी को बहुत पसन्द करते हैं। एक दिन आकस्मिक निरीक्षण पर स्टेट लेविल टास्क फोर्स के सदस्य विद्यालय में आये थे, जिसमें आजमगढ़ मण्डल के सहायक निदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह भी थे। उस दिन दलिया बना था। दलिया खाकर उन्होंने बहुत तारीफ की थी और कहा कि इतना अच्छा दलिया उन्होंने अपने घर पर भी कभी नहीं खाया।

शिक्षा की ज्योति का आदर्श प्रयास

12

स्वैच्छिक संस्था 'बाढ़ एवं प्रदूषण पीड़ित कल्याण समिति' वाराणसी नगर क्षेत्र के 17 विद्यालयों में लगभग 1800 बच्चों को प्रतिदिन मध्याह्न भोजन उपलब्ध करा रही है। इन सभी विद्यालयों के लिए भोजन प्राथमिक विद्यालय रामनगर के परिसर में स्थित केन्द्रीयकृत रसोई में तैयार किया जाता है और आस–पास के विद्यालयों में खाना रिक्शा ठेलिया पर अलग–अलग बर्तनों में रख कर समय पर भिजवाया जाता है। संस्था के अध्यक्ष श्री राम आसरे प्रसाद कुशवाहा बताते हैं कि यह कार्य उनकी संस्था वर्ष 2005 से कर रही है। संस्था गरीब मजदूरों के बच्चों के लिये एन0सी0एल0पी0 के अन्तर्गत पाँच विद्यालय नगर क्षेत्र में संचालित कर रही है। संस्था का मुख्य उद्देश्य शिक्षा की ज्योति फैलाना है। प्रारम्भ में जब उन्होंने मध्याह्न–भोजन–योजना का कार्य आरम्भ किया था, उस समय प्रति बच्चा एक रुपया खाने पर खर्च करने का प्राविधान था। योजना के आरम्भ के वर्ष में वाराणसी नगर क्षेत्र के सभासदों ने बिल्कुल रुचि नहीं ली, बल्कि प्रशासन को लिखकर अपनी असमर्थता जाहिर कर दी थी। तत्कालीन जिलाधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी योजना के क्रियान्वयन को लेकर बहुत चिन्तित थे। एक दिन भ्रमण के दौरान उन्होंने संस्था द्वारा राष्ट्रीय बाल मजदूर परियोजना (एन0सी0एल0पी0) के अन्तर्गत संचालित विद्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने परियोजना के अन्तर्गत बने बच्चों के भोजन को खाकर देखा तो खुश हुए और हमसे मध्याह्न–भोजन–योजना से जुड़ने को कहा। तत्पश्चात जिलाधिकारी द्वारा एक दिन उनके कार्यालय में बैठक आयोजित की गई जिसमें नगर की कई स्वैच्छिक संस्थाओं को बुलाया गया। बैठक में जिलाधिकारी महोदय ने संस्थाओं के प्रतिनिधियों को समझाया कि इस योजना से आपको कोई आर्थिक लाभ तो अवश्य नहीं होगा, लेकिन अपने क्षेत्र के बच्चों के लिए काम करने का यह अच्छा अवसर है। उन्होंने कहा कि इस तरह की योजनाओं का सफल क्रियान्वयन सिर्फ सामुदायिक भावना तथा सामाजिक सहभागिता के द्वारा ही किया जा सकता है और यह भावना स्वैच्छिक संस्थाओं में बेहतर ढंग से देखी जा सकती है।

जबसे इस संस्था को मध्याह्न–भोजन का कार्य सौंपा गया है, तब से यह कार्य वह लगातार कर रही है। समय–समय पर भोजन में सुधार हुआ और मेनू में बदलाव आता गया। विद्यालय में बच्चों की संख्या लगातार बढ़ी है और उनकी बीच में विद्यालय छोड़कर घर चले जाने की आदत अब नहीं रही है। अधिकांशतः बच्चे प्रतिदिन विद्यालय आते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई के स्तर में सुधार हुआ है। वाराणसी नगर क्षेत्र में 116 प्राथमिक तथा 22 पूर्व माध्यमिक विद्यालय संचालित हैं। इन सभी विद्यालयों के बच्चों को मध्याह्न–भोजन तैयार करने एवं वितरित करने का कार्य 12 स्वैच्छिक संस्थाओं को सौंपा गया है। इन चयनित संस्थाओं को 5 से लेकर अधिकतम 17 विद्यालय आवंटित हैं। श्री कुशवाहा आगे बताते हैं कि उनकी संस्था ने 17 विद्यालयों के बच्चों का एक ही रसोई में भोजन तैयार करने के लिए दो रसोइये, उनको रसोई कार्य में सहयोग करने के लिए 6 महिलायें है

,खाद्य–सामग्री की साफ–सफाई के साथ–साथ सब्जी काटने, खाने के बर्तन धोने आदि का कार्य करती हैं। इसके साथ ही विद्यालयों तक भोजन पहुँचाने के लिए दो अन्य व्यक्तियों को भी नियुक्त किया है। तैयार खाना रिक्शा ठेलिया पर अलग–अलग बर्तनों में रखकर इन्हीं के द्वारा सभी विद्यालयों में समय से वितरित किया जाता है। मुख्य दो रसोइयों को प्रतिमाह तीन हजार रुपया वेतन के रूप में मिलता है। रिक्शा चालक को प्रति दिन 100 रुपये की दर से भुगतान किया जाता है। कोटेदार से आवश्यकता के अनुरूप खाद्यान्न समय से प्राप्त हो जाता है। योजना के अन्तर्गत देय कन्वर्जन कास्ट विभाग द्वारा संस्था को सीधे उपलब्ध कराई जाती है। कार्य से सम्बन्धित सभी अभिलेख, स्टॉक रजिस्टर आदि अधिकृत अधिकारियों के निरीक्षण हेतु तैयार रखे जाते हैं। संस्था ने विद्यालय में सुरक्षा हेतु एक चौकीदार को भी नियुक्त किया है।

खाना पकाने व विद्यालयों तक वितरण करने के लिए पर्याप्त बर्तन, चार गैस सिलैण्डर व दो गैस बर्नर उपलब्ध हैं। भण्डारण के लिए विद्यालय में बड़ा सा एक अतिरिक्त कक्ष है, जिसमें खाद्यान्न तोलने की सुविधा के साथ–साथ महिलायें बैठकर खाद्यान्न की सफाई करती हैं। प्रतिदिन 1700–1800 बच्चों के भोजन के लिए लगभग दो कुन्तल गेहूँ/चावल की आवश्यकता होती है। साग–सब्जी, दाल, बेसन, दही, आयोडाईज्ड नमक, ब्राण्डेड मसाले व तेल आदि पर लगभग 4000 रुपये रोज का खर्च आता है। एक गैस सिलैण्डर भी एक दिन चलता है। संस्था की यह संचालित केन्द्रीयकृत रसोई क्योंकि विद्यालय के भवन में है, अतः इसका कोई किराया नहीं देना पड़ता है। विद्यालय में बच्चों की पढ़ाई के लिए पर्याप्त कक्ष हैं । पानी की सुविधा के लिए ओवरहेड टैंक बना है, जिसमें पानी मोटर पम्प द्वारा भरा जाता है।

प्रधानाध्यापक श्री श्याम नारायण उपाध्याय का कहना था कि मिड–डे मील समय से बनता है और सभी अन्य विद्यालयों के साथ–साथ हमारे विद्यालय को समय से उपलब्ध करा दिया जाता है। भोजन मेनू के अनुसार बनता है, उसे बच्चे बड़े चाव से एक साथ मिल–जुलकर खाते हैं। उनमें उच्च या निम्न का कोई भेदभाव नहीं है। विद्यालय में कुल 200 बच्चे हैं, जिनमें 78 छात्रायें तथा 122 छात्र हैं। अधिकांश बच्चे गरीब परिवारों के होते हैं। आहार के अतिरिक्त कुछ अन्य सुविधायें जैसे छात्र–वृत्ति, ड्रेस, किताब–कापी उन्हें विद्यालय की ओर आकर्षित करती हैं। यही कारण है कि आस–पास प्राइवेट विद्यालय होने के बावजूद विद्यालय में बच्चों का नामांकन बढ़ा है। विद्यालय में बच्चों को खेल–कूद के लिये पर्याप्त स्थल है। बच्चे विद्यालय में पूरे समय रूकते हैं और उनकी पढ़ाई में रुचि भी बढ़ी है।

ग्राम– प्रधान का अवदान

13

ग्राम लोहटा वाराणसी जनपद के काशी विद्यापीठ ब्लाक के अन्तर्गत आता है। इसके ग्राम–प्रधान श्री हाजी सलीम अंसारी पढ़े–लिखे व्यक्ति हैं। उन्होंने बी0काम0 तक की शिक्षा प्राप्त की है। गाँव के मदरसा में वे नौकरी भी करते हैं; लेकिन मदरसे से वेतन के रूप में केवल एक रुपया ही लेते हैं बाकी सब मदरसे को दान कर देते हैं। शिक्षा के प्रति उनका बहुत लगाव है, विशेष रूप से गाँव के बच्चों की शिक्षा के प्रति। हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार मिले, इसके लिये माता–पिता और विद्यालय स्तर पर प्रयास होना चाहिए। प्रधान के पद पर निर्वाचित होने के पश्चात् उन्होंने अपने गाँव के सभी विद्यालयों का निरीक्षण किया और अध्यापकों से चर्चा की कि कैसे बच्चों की शिक्षा को और बेहतर बनाया जा सकता है। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि विद्यालय में बच्चों को मध्याह्न–भोजन देने का प्राविधान है और इस व्यवस्था से उनके स्वास्थ्य पर ही नहीं, बल्कि शिक्षा पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है, तो उन्होंने इसमें भी रुचि लेना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार उन्होंने प्राथमिक शिक्षा की प्रगति के लिए बच्चों में स्वास्थ्य के महत्व को समझा और इस योजना के संबंध में अधिक से अधिक जानकारी लेकर एवं पूर्व के अनुभवों को ध्यान में रखकर कार्य किया। खाद्य–सामग्री समय से विद्यालय को मिल सके, इसके लिए कम से कम एक माह की सामग्री का भण्डारण विद्यालय में बने बड़े भण्डार–कक्ष में किया जाने लगा।

श्री कन्हैया रसोइये का काम करते हैं। उनका कहना है कि स्कूल में सदैव भोजन समय पर मेनू के अनुसार दिया जाता है। बच्चे साफ–सुथरा व स्वादिष्ट भोजन करके उत्साहित रहते हैं और समय से विद्यालय आ जाते हैं। विद्यालय में कुल 538 बच्चे हैं जिनमें से 222 छात्र व 316 छात्रायें हैं। अधिकांशतः बच्चे प्रतिदिन स्कूल आते हैं। बच्चों के अभिभावकों का कहना है कि विद्यालय में भोजन मेनू बोर्ड पर छपे कार्यक्रम के अनुसार दिया जाता है। बच्चे खाना बड़े चाव से एक साथ बैठ कर खाते हैं। उनमें ऊँच–नीच का कोई भेद–भाव नहीं है। अभिभावक विद्यालय में मिलने वाले भोजन की साफ–सफाई की व्यवस्था को देख कर संतुष्ट रहते हैं। खाना खाने से पूर्व व बाद में बच्चे अपने बर्तन विद्यालय में लगे हैण्ड पम्प पर स्वयं साफ करते हैं। भोजन पकाने के बर्तन रसोईया व उसकी दो सहायिकायें

श्रीमती माधुरी तथा ममता प्रतिदिन साफ करके रखती हैं। सहायिकाओं को इस कार्य के लिए माह में 1500–1600 मिल जाते हैं। अतिरिक्त समय में वे दूसरी जगह भी काम कर लेती हैं। खाने का सामान मेनू के अनुसार एक दिन पहले ही विद्यालय में रसोइया को उपलब्ध करा दिया जाता है।

प्रधान अध्यापिका श्रीमती ऊषा मिश्रा इस विद्यालय में पिछले 19 वर्षों से कार्यरत हैं। वर्ष 2006 में प्रमोशन के बाद वे इस विद्यालय की प्रधानाध्यापिका बनीं। वे बताती हैं कि इस इलाके में एक–एक आदमी के 8–8, 10–10 बच्चे हैं। घर पर सभी को पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता। गाँव की आबादी लगभग 60000 है। लगभग 24000 वोटर हैं। यह जिले की सबसे बड़ी ग्राम–सभा है। बुनकरों का गढ़ होने के कारण लोग यहाँ रोजगार की तलाश में बाहर से आकर बस गये हैं। 55–60 प्रतिशत आवादी मुसलमानों की है। अधिकांश घरों में टी0बी0 के मरीज हैं। बच्चे अधिक होने, आर्थिक तंगी व बीमारियों के कारण बहुत सी मातायें अपने बच्चों को सुबह कुछ खिलाकर नहीं भेज पातीं। ऐसे बच्चों के लिए प्रतिदिन विद्यालय में भरपेट सुपाच्य भोजन मिलता है तो वे समय पर विद्यालय आ जाते हैं। पूरे समय विद्यालय में रुके रहने से उनकी पढ़ाई पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

विद्यालय की दो छात्रायें, रजिया कक्षा–5 व शबनम कक्षा–2, जो बहनें हैं, बताती हैं कि वे छः बहन व चार भाई हैं। चार बड़ी बहनों का विवाह हो गया है। सबसे छोटा भाई आंगनबाड़ी में पढ़ता है व अन्य तीनों भाई मजदूरी करते हैं। इनके अब्बू कोई काम नहीं करते। घर पर न सुबह खाना बनता है, न दोपहर को बनता है। केवल शाम को बनता है। सुबह हम लोग केवल चाय पीकर विद्यालय आते है। माँ से खाने को कहते हैं तो कहती हैं कि शाम को बनेगा तथा मिलेगा। ये बच्चियाँ कहती हैं कि यदि विद्यालय हम पढ़ने नहीं आते तो माँ हमसे घर का काम कराती हैं और स्कूल जैसा खाने को हमें नहीं मिलता। कक्षा–3 की छात्रा पिंकी की माँ श्रीमती निर्मला सब्जी बेचकर किसी प्रकार 20–25 रुपये रोज कमा पाती हैं। उच्च जाति की निर्मला बताती हैं कि उनके पति की नशा करने की आदत से पूरा घर बर्बाद हो गया है। चार छोटे–छोटे बच्चों को पढ़ाना व खिलाना उनके बस की बात नहीं है। विद्यालय की निःशुल्क पढ़ाई व कम से कम एक बार खाना मिलने से बच्चे पढ़ने आ जाते हैं और इधर–उधर गलत संगत में पड़ने से बचे हुए हैं। इसका श्रेय ग्राम–प्रधान जी को दिया जा सकता है।

मध्याह्न-भोजन-योजना
मिर्जापुर

(1) प्राथमिक विद्यालय, नुआँव प्रथम, ब्लाक–चुनार।
(2) प्राथमिक विद्यालय, जमुई, ब्लाक–नारायनपुर।
(3) प्राथमिक विद्यालय, रैपुरिया, ब्लाक–चुनार।

विद्यालय नहीं यह मन्दिर है

14

मिर्जापुर जनपद में चुनार तहसील के अन्तर्गत मुख्यालय से 60 कि0मी0 दूर–दराज स्थित प्राथमिक विद्यालय नुआँव प्रथम 'मिड–डे मील' की दृष्टि से ही नहीं अपितु प्रत्येक दृष्टि से अपने में एक अनोखा विद्यालय है। इसे दूर से देखकर ही ऐसा प्रतीत होता है मानो यह एक विद्यालय नहीं, बल्कि एक मन्दिर है। 113 बच्चों के इस विद्यालय में 62 छात्रायें तथा 51 छात्र हैं। प्रधानाध्यापक श्री दुनियाँ राम पिछले 12 वर्षों से इस विद्यालय में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। उनकी प्रोन्नति तीन वर्ष पहले हुई है। विद्यालय में दो शिक्षा मित्र भी हैं। ग्राम सभा क्षेत्र में तीन प्राथमिक विद्यालय तथा एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय और हैं, जो एक–दूसरे से एक से चार कि0मी0 की दूरी पर बने हैं। सभी में मध्याह्न–भोजन अलग–अलग बनता है। गाँव की आबादी लगभग 5000 है, जिसके हर घर में शौचालय बना है, पूरे गाँव में ढकी हुई नालियाँ बनी हैं। वर्ष 2008 में इस गाँव को स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत निर्मल ग्राम पुरस्कार मिला है।

इस विद्यालय में बच्चों को मिड–डे मील के लिए डायनिंग टेबल बनवाई गई है। बच्चे उसी पर बैठ कर प्रतिदिन भोजन करते हैं। तीन कतारों में डायनिंग टेबिल तथा उसके दोनों ओर से बैठने के लिये बेंच सीमेन्ट की बनी हैं, जिस पर टाइल्स लगे हैं। इन पर बैठकर 150 बच्चे एक साथ खाना खा सकते हैं। इस स्थान पर प्लास्टिक का शेड लगा है, जिसे एम0डी0एम0 शेड का नाम दिया गया है। शेड के नीचे दीवारों पर भोजन, स्वास्थ्य और विज्ञान से जुड़े सन्देश लिखे हैं। वे बच्चों को शिक्षित एवं संस्कारित होने की प्रेरणा देते हैं। शेड के खम्भों पर बच्चों को प्रिय लगने वाला पेन्ट कराया गया है और आस–पास वाल पेन्टिंग्स भी बनी हैं। अच्छे किस्म के पेंट लगे होने के कारण दो वर्ष बाद भी ये नये जैसे दिखते हैं।

ग्राम–प्रधान डॉ0 राजेश कुमार बताते हैं कि एक दिन बच्चों को विद्यालय में जमींन पर बैठकर खाना खाते देखकर उन्हें बहुत बुरा लगा। उन्होंने सोचा कि हम एक ओर स्वच्छता की बात करते हैं और दूसरी ओर

हमारे बच्चे जमींन पर बैठकर खाना खा रहे हैं। यह उन्हें अच्छा नहीं लगा। उन्होंने पहल करके ब्लाक संसाधन समन्वयक श्री भगवती सिंह से विचार–विमर्श किया और फिर जिला पंचायत राज अधिकारी श्री बालकृष्ण शुक्ला से वार्ता की कि यदि बच्चों को विद्यालय में भोजन करने के लिए रसोई घर के पास एक शेड बना दिया जाय तो उसके नीचे बैठकर बच्चे एक नियत स्थान पर एक साथ भोजन कर सकते हैं। इस विचार से वह सहमत हो गये और उन्होंने राज्य वित्त एवं बारहवां वित्त आयोग से प्राप्त धनराशि से यह निर्माण कार्य करने की अनुमति प्रदान कर दी। इस कार्य पर 1,27,000 रुपये की लागत आई। यह धनराशि आवश्यकता से कम होने के कारण ग्राम–प्रधान द्वारा गॉव के कुछ सम्भ्रान्त व्यक्तियों से मदद की माँग की गयी। ग्रामवासी सर्वश्री राम समुझ सिंह, उदय प्रताप, कमला सिंह, व संकटा प्रसाद ने मिल कर बीस पेटी टाईल्स, जिनकी लागत 5400 रू0 थी, विद्यालय को उपलब्ध कराये।

इस व्यवस्था में बच्चे आराम और गरिमा के साथ खाना खाते हैं और उनका स्वाभिमान का स्तर ऊँचा होता है। सभी मौसमों में एक साथ और एक स्थान पर बैठकर खाना खाने की यहाँ बहुत अच्छी सुविधा है। मेज व बेंच पर टाईल्स लगे हैं, इसलिए साफ–सफाई में बहुत आसानी रहती है। चिकित्सकीय दृष्टि से भी यह बहुत अच्छा है। जहाँ हम खाने के लिए प्लेट रखते हैं वह 9 इन्च की ऊँचाई पर होना चाहिए। इससे खाना खाते समय बच्चों को गरदन नहीं झुकानी पड़ती। खाना खाते समय उनके कपड़े गन्दे नहीं होते। बैठने की दूरी बराबर बनी रहती है और वह पंक्ति में रहकर खाना खाते हैं, जिससे अनुशासन बना रहता है। खाना खाने की बेंच एवं टेबिल इस तरह से बनी हैं कि यदि कोई बच्चा भोजन के बीच में उठना–बैठना चाहता है तो उसे निकलने में आसानी हो। किचन के समीप होने से बच्चे एक तरफ से अपना खाना प्लेट में ले लेते हैं और आगे बढ़कर दूसरी तरफ बेंच पर बैठ जाते हैं। इससे भोजन वितरण में बहुत सुविधा रहती है। बीच में बच्चों को दुबारा भोजन परोसने में रसोइये को भी सहजता रहती है। खाना खाने से पूर्व तथा बाद में साबुन से हाथ धोने के लिए अलग से व्यवस्था की गई है। बच्चे एक बड़ी पानी की चौकोर टंकी में लगीं टोंटियों पर हाथ धोते हैं और खाना लेकर अपनी बेंच पर बैठ जाते हैं। इन सब व्यवस्थाओं के फलस्वरूप बच्चों में स्वच्छता की आदतें विकसित हो रही हैं।

विद्यालय में भोजन की व्यवस्था, स्वच्छता एवं शैक्षणिक वातावरण से प्रभावित होकर जिले के डी0पी0आर0ओ0 ने तीस लाख की लागत से गाँव में पंचायत भवन बनाने के लिए विभाग की ओर से धनराशि निर्गत की है और भवन का निर्माण कार्य जारी है जो दो–तीन माह में पूरा हो जाएगा। डॉ0 महेन्द्र राय, उप जिलाधिकारी यह मानते हैं कि इस गाँव की जनता महान् है, जिसने ऐसे कर्मठ, ईमानदार, युवा ग्राम–प्रधान को निर्वाचित किया, जिसने अपनी कर्तव्यनिष्ठा, कर्मठता एवं ईमानदारी के बल पर विद्यालय ही नहीं पूरे गाँव की दशा सुधार दी है। उन्होंने गाँव ही नहीं, जिला ही नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश के लिए इस प्रकार का उदाहरण पेश किया है, जिससे सीख लेकर दूसरे क्षेत्र के लोग अपने यहाँ की व्यवस्था में बदलाव ला सकते हैं।

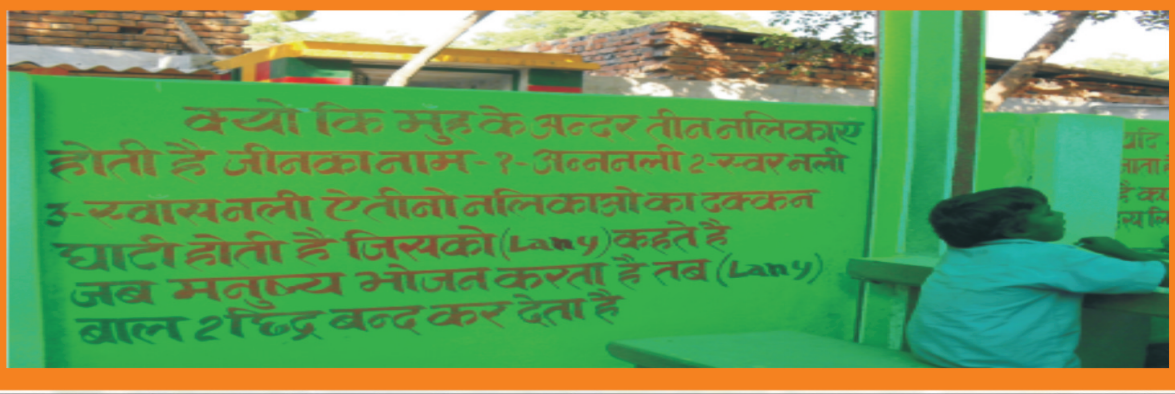

सामाजिक सौहार्द एवं आपसी एकता का प्रतीक

15

मिर्जापुर जनपद के नरायनपुर ब्लाक में स्थित प्राथमिक विद्यालय जमुई में बच्चों को एक साथ बैठकर खाना खाते देख कर कहा जा सकता है कि ''मध्याह्न–भोजन–योजना'' अपने निर्धारित उद्देश्यों को पूरा कर पाने में सफल हो रही है। भोजन बनाने के लिए गाँव की अनुसूचित जाति की गरीब महिला श्रीमती गामा को नियुक्त किया गया है। वह योजना के आरम्भ से ही विद्यालय में यह कार्य कर रही है। उसे पारिश्रमिक समय से मानक के अनुरूप मिल जाता है। उसका छोटा बेटा इसी विद्यालय में कक्षा–1 का छात्र है। वह भी पढ़ने के लिये विद्यालय माँ के साथ प्रतिदिन आ जाता है। बड़ा बेटा पति के साथ मजदूरी करने चला जाता है। उसको इस बात का बहुत पछतावा है कि वह अपने बड़े बेटे को नहीं पढ़ा सकी। विद्यालय में रसोइये के रूप में जब उसको काम मिला तो किसी ने भी इसका गाँव में विरोध नहीं किया। यद्यपि इस विद्यालय में उच्च वर्ग के बहुत से परिवारों के बच्चे पढ़ते हैं। बच्चे एक साथ बैठ कर खाना खाने में कभी भी एतराज नहीं करते हैं। उनमें किसी प्रकार का जाति विभेद या छूआ–छूत की भावना देखने को नहीं मिलती। विद्यालय में कुल 171 छात्र–छात्रायें हैं, जिनकी संख्या लगभग बराबर है।

ग्राम–प्रधान श्रीमती इन्द्रावती ने बताया कि ग्राम–प्रधान को अनुबन्ध के आधार पर रसोइये को कार्ययोजित करने की शक्ति प्रदान की गयी है साथ ही इस प्रकार के निर्देश हैं कि रसोई के कार्य में अनुसूचित जाति की महिलाओं को विशेषकर परित्यक्ता या अन्य दुर्बल श्रेणी की महिलाओं को प्राथमिकता दी जाये। बच्चों को विद्यालय में भोजन उपलब्ध कराने का दायित्व रसोइया को सौंपा गया है। तदनुरूप वह अपने दायित्व का निर्वहन पूरी तत्परता एवं कुशलता से करती है। शुरू में उन्हें लगा था कि कहीं गाँव के लोग रसोइया की इस नियुक्ति पर किसी प्रकार का विरोध न करें, लेकिन गाँव के लोग बहुत समझदार हैं। वे जानते हैं कि आज जमाना बहुत आगे निकल चुका है, जाति से अधिक महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति कर्मठ हो, स्वस्थ हो और स्वच्छतापूर्वक रहता हो। श्रीमती गामा

(रसोइया) के कार्य, व्यवहार एवं बच्चों के प्रति लगाव को देख कर अभिभावक पूरी तरह से सन्तुष्ट हैं। लोग इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते कि भोजन किसके द्वारा बनाया जा रहा है। बच्चों का मन तो वैसे ही कोमल होता है। उनमें छोटे–बड़े, ऊँच–नीच में अन्तर करने की प्रवत्ति नहीं होती। सभी जाति के बच्चे एक साथ बैठ कर खाना खाते हैं और उनमें किसी प्रकार के भेदभाव की भावना नहीं है। मध्याह्न–भोजन–योजना का सबसे अधिक मजबूत पहलू यही है, जिसके कारण योजना के दूसरे मूल उद्देश्यों की पूर्ति होने की राह आसान हो जाती है। विद्यालय में लगे हैंड पम्प के इर्द–गिर्द पानी इकट्ठा न हो इसलिये बेकार पानी की निकासी क्यारियों में कर दी गयी है। इन क्यारियों में अच्छे–अच्छे फूलों के पौधे लगे हैं। गाँव के लोग विद्यालय से फूल ले जाकर मन्दिर में चढ़ाते हैं। विद्यालय की व्यवस्था को देख कर कहा जा सकता है कि यदि समुदाय, प्रधान एवं अध्यापकगण योजना को गम्भीरता से लें, तभी उसका सफलतापूर्वक संचालन सम्भव है।

विद्यालय में एक मूक–वधिर छात्र अजय कुमार कक्षा–3 में पढ़ता है। वह इशारे से बताता है कि उसे विद्यालय का भोजन बहुत अच्छा लगता है। वह रोज समय से विद्यालय आता है। उसे पढ़ने में सहयोग करने के लिये विद्यालय में **इंटीनरेन्ट टीचर** की व्यवस्था है।

प्रधानाध्यापक (इन्चार्ज) श्री संजय कुमार सिंह बताते हैं कि बच्चों का भोजन स्वाद एवं पौष्टिकता की दृष्टि से गुणकारी है। इस बात का विशेश ध्यान रखा जाता है कि भोजन सुरुचिपूर्ण ढंग से बनाया जाय व बच्चों को खिलाया जाय। इसके लिये विद्यालय के वातावरण को स्वच्छ बनाये रखा जाता है। बच्चों की भोजन के प्रति ललक एवं रुचि बनी रहे, इसके लिये नित्य के भोजन में विविधता रखी जाती है; क्योंकि एक ही प्रकार का भोजन नित्य करने से बच्चों की भोजन के प्रति रुचि कम हो जाती है। भोजन प्रतिदिन निर्धारित मेनू के अनुसार बनाया जाता है। मेनू के अनुरूप प्रयुक्त होने वाली खाद्य सामग्री जैसे तेल, दाल, सब्जी, नमक, मसाले आदि निर्धारित मात्रा के अनुसार समय से रसोइया को उपलब्ध करा दी जाती है। उनके अनुसार विद्यालय की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि लोगों की जाति विशेष के प्रति भेदभाव की भावना दूर हुई है। सामान्य तौर पर लोगों की सोच में यह बहुत बड़ा परिवर्तन है। यह भी इस योजना की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

स्वच्छता एवं सुन्दरता का प्रतीक विद्यालय

16

प्राथमिक विद्यालय रैपुरिया मिर्जापुर जनपद में चुनार ब्लाक का एक अनूठा विद्यालय है। विद्यालय में कुल 411 बच्चे नामांकित हैं, जिनमें 210 छात्रायें तथा 201 छात्र हैं। बच्चों की पढ़ाई के साथ–साथ विद्यालय में स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मध्याह्न–भोजन बनाने के लिए रसोई कक्ष विद्यालय प्रांगण में एक किनारे में बनाया गया है, जिसमें खाद्य सामग्री स्टोर करने की भी सुविधा है। विद्यालय अनुदान की राशि से बच्चों के खाने के लिये बर्तन भी खरीदे गये हैं। विद्यालय में एक बाल–सभा स्थल बना है, जहाँ बैठकर बच्चे प्रतिदिन भोजन करते हैं। बाल–सभा के चारों ओर बागवानी लगाई गई है, जिसमें सुन्दर वृक्ष एवं फूलों की पौध लगी हैं। विद्यालय में पानी पीने व हाथ धोने के लिये हैंड पम्प है। खाना खाने से पूर्व हाथ धोने व खाने के बाद पानी पीने के दौरान हैंड पम्प पर बच्चों की भीड़ इकट्ठी न हो, यह ध्यान में रख कर टाइल्स का वाश–बेसिन बनाया गया है, जहाँ खड़े होकर कई बच्चे उसमें लगी टोंटियों पर हाथ धो सकते हैं और पानी पी सकते हैं। ऐसी व्यवस्था के कारण विद्यालय में भोजन के दौरान होने वाली गन्दगी पर अंकुश लगता है। विद्यालय में ओवर–हेड वाटर टैंक भी बना है, जिसमें पानी भरने के लिये जेट–पम्प की सुविधा है।

हैंड पम्प तथा वाश–बेसिन एवं किचन के बेकार पानी की निकासी की व्यवस्था इस प्रकार से की गयी है कि यह विद्यालय में बनी फूल–पौधों की क्यारियों में चला जाता है और पौधों व भूमि के लिये बायो–फर्टिलाइजर का काम करता है। इससे वृक्ष व पौधशाला हरी–भरी बनी रहती है, जो विद्यालय की स्वच्छतापूर्ण व्यवस्था में चार चाँद लगा देती है। विद्यालय में ऊँची चहरदीवारी बनी है, जिसके कारण सुरक्षा बनी रहती है।

प्रधानाध्यापिका श्रीमती राजमुनि तिवारी का कहना है कि विद्यालय में जो भी सुविधायें हैं, उन्हें जुटाने में ग्राम प्रधान श्रीमती विमला देवी की भूमिका सराहनीय है। प्रधान जी के पति ग्रामीण बैंक में प्रबन्धक हैं और वे स्वयं भी पढ़ी–लिखी संवेदनशील महिला हैं। विद्यालय में बने बाल–सभा स्थल पर प्रत्येक शनिवार को दो बजे बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल–कूद, भाषण व साफ–सफाई पर चर्चा आयोजित की जाती है। इन आयोजनों के अवसर पर बच्चों के अभिभावक भी उपस्थित होते हैं। प्रधान जी स्वयं भी इस प्रकार के अवसरों पर बच्चों के बीच उपस्थित होकर उनका उत्साहवर्धन करती हैं।

विद्यालय में भोजन बनाने के लिये दो रसोइया–श्रीमती इन्द्रावती देवी तथा श्रीमती मुन्नी देवी, जो पिछड़ी जाति की गरीब महिलायें हैं, को नियुक्त किया गया है। विद्यालय से इनको प्रत्येक माह एक हजार रुपये की आमदनी होने से इनके परिवारों को आर्थिक सहारा मिल जाता है। रसोई के पास दीवार पर रसोइया के दायित्व एवं स्वच्छता के नियम लिखे हुए हैं, जो रसोइया के साथ–साथ बच्चों, अध्यापकों, अभिभावकों, ग्रामवासियों व शिक्षा समिति के सदस्यों को बार–बार याद दिलाते हैं कि वह कैसे अपने दायित्वों का निर्वहन करें। दीवारों पर बनी पाचन तन्त्र एवं भोजन में जरूरी पोषक तत्वों की रंगीन पेंटिंग बच्चों के लिए शिक्षाप्रद एवं जागरूकता प्रदान करती हैं। इन्हें पढ़ कर लोगों को सभी भोजन के आवश्यक पोषक तत्वों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

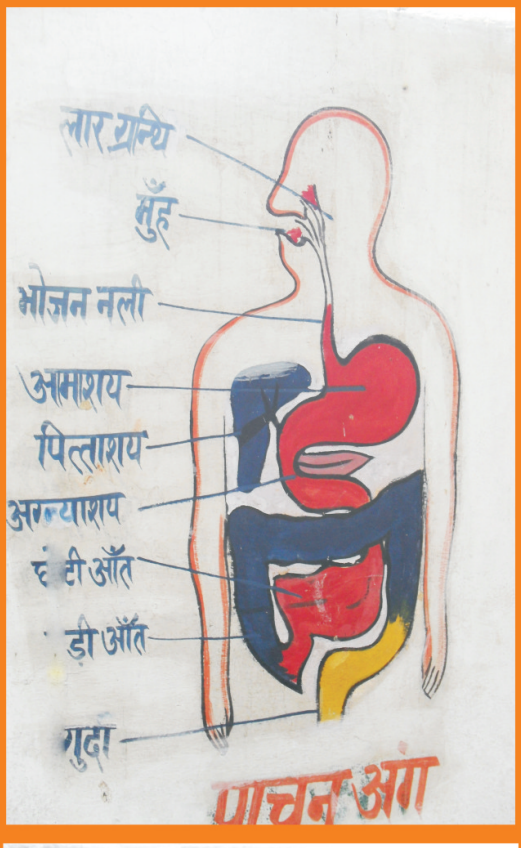

मध्याह्न भोजन प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश
तृतीय तल, अपट्रान भवन, गोमती नगर, लखनऊ–226010
फोन नं0 . 0522–2308501, 2308502, 2307093, मोबाइल नं0 – 09453004002, 09453004022, 09453004012